



निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

आप 80 हजार रुपये या 2 लाख रुपये महीना कमाएं। बिना किसी सही मनी प्लान के यह पैसा आपकी सोच से भी तेज गायब हो जाता है।

शेयर बाजार Vs एसआईपी
बेहतर है कौन

प्लानिंग **बिजनेस डेस्क**

अगर आप भी एक नए निवेशक हैं और अपने पैसों को शेयर बाजार या म्यूचुअल फंड में निवेश करने का प्लान बना रहे हैं, तो पहले आपको दोनों में से कहां से शुरूआत करनी चाहिए। आज हम आपको इसी के बारे में बताने वाले हैं। आइए जानते हैं।

पैसों का निवेश जरूरी

पैसों का निवेश करना बहुत ही जरूरी होता है। ऐसे में हर व्यक्ति को अपनी बचत को एक अच्छी जगह निवेश जरूर करना चाहिए, जिससे वह अपनी वेलथ को बढ़ा सके। पैसों को निवेश करने के लिए कई सारे विकल्प मौजूद हैं। कुछ लोग सुरक्षित निवेश करना चाहते हैं, जिसके लिए वह बैंक एफडी और स्मॉल सेविंग स्क्रीम में अपने पैसों का निवेश करते हैं। वहीं कुछ लोग ज्यादा मुनाफा कमाने के लिए रिस्क लेते हैं और शेयर बाजार या म्यूचुअल फंड में अपने पैसों का निवेश करते हैं। अगर आप भी एक नए निवेशक हैं, और अपने पैसों को शेयर बाजार या म्यूचुअल फंड में निवेश करने का प्लान बना रहे हैं, तो पहले आपको दोनों में से कहां से शुरूआत करनी चाहिए। आज हम आपको इसी के बारे में बताने वाले हैं।

आइए जानते हैं नए निवेशक
कहां से शुरू करें निवेश

बात करें शेयर बाजार में निवेश की तो शेयर बाजार में निवेश काफी रिस्क भरा होता है। किसी भी कंपनी के शेयर खरीदने पर आपको कितना रिटर्न मिलेगा, यह सीधा शेयर की कीमत पर निर्भर करता है। शेयर की कीमत बढ़ भी सकती है और घट भी सकती है। कीमत घटने पर आपको नुकसान भी हो सकता है। ऐसे में शेयर बाजार में निवेश करने से पहले आपको कंपनी के कारोबार, बैलेंस शीट और सेक्टर ट्रेंड्स की समझ जरूर होनी चाहिए। ऐसे में शेयर बाजार में निवेश करने से पहले आपको म्यूचुअल फंड में निवेश करना चाहिए।

नए निवेशकों के लिए
म्यूचुअल फंड बेस्ट

अब बात कर लेते हैं म्यूचुअल फंड में निवेश की, तो शेयर बाजार में पहले न निवेश कर आपको सबसे पहले एसआईपी के जरिए म्यूचुअल फंड में निवेश करना चाहिए। म्यूचुअल फंड के जरिए भी आपके पैसे शेयर बाजार में ही लगाए जाते हैं लेकिन यह पैसे कब और कैसे और कितना लगेगा, यह फंड मैनेजर तय करते हैं। एसआईपी में आप बस हर महीने एक निश्चित रकम निवेश करते हैं। लंबे समय तक निवेश कर आप यहां औसतन 12 प्रतिशत की दर से रिटर्न पा सकते हैं। शुरूआत में म्यूचुअल फंड में निवेश कर आप बाजार की चाल को समझ सकते हैं और आपको शेयर बाजार की समझ भी होगी। ऐसे में शेयर बाजार में निवेश करने से पहले एक बार म्यूचुअल फंड में निवेश जरूर करें।

अनजाने और अनचाहे खर्च को रोकना होगा, मिडिल क्लास को नहीं रहेगी टेंशन

सैलरी मिलने के कुछ दिन बाद ही पर्स हो जाता है खाली, ये टिप्स आएंगे काम

उदाहरण से समझें : रिया 90,000 रुपये महीना कमाती है। वह हर महीने लगभग 20,000 रुपये सिर्फ रोज की कॉफी, लंच, स्नैक्स और वीकेंड पर बाहर घूमने में खर्च कर देती है। यह साल का 2.4 लाख रुपये हो जाता है। अगर इसकी आधी रकम भी 11% सालाना रिटर्न के साथ निवेश की जाए तो पांच साल में 8.4 लाख रुपये का फंड बन सकता है।



उदाहरण से समझें गणित **आखिर क्यों 'गायब' हो जाती है सैलरी**

अपनी बात को समझाने के लिए हम एक उदाहरण का सहारा लेते हैं। एक लड़की रिया जो एक कंसल्टेंट हैं और 90,000 रुपये महीना कमाती हैं। वह हर महीने लगभग 20,000 रुपये सिर्फ रोज की कॉफी, लंच, स्नैक्स और वीकेंड पर बाहर घूमने में खर्च कर देती हैं। यह साल का 2.4 लाख रुपये हो जाता है। अगर इसकी आधी रकम भी 11% सालाना रिटर्न के साथ निवेश की जाए तो पांच साल में 8.4 लाख रुपये का फंड बन सकता है। छोटे-छोटे फैसले चुपके से बड़ी दौलत बन जाते हैं।

ये हैं काम के टिप्स

ऐसे अनचाहे खर्च को रोकने और पैसे पर कंट्रोल के लिए 4 टिप्स हैं। अपनी सैलरी की तरह हर महीने बचत को ऑटोमैटिक कर लें। इसके लिए किसी मुश्किल अकाउंट की जरूरत नहीं है। बस 4 आसान पॉकेट बना लें।

ये इस प्रकार हैं :

1. सैलरी हब : यह आपका मुख्य इनकम अकाउंट है। यानी आपकी सैलरी इसी अकाउंट में आती है।
2. संप्टी नेट : इसमें इमरजेंसी फंड और लक्ष्य-आधारित बचत के लिए पैसा रखें। यह रकम 60:40 के रेश्यो में होनी चाहिए।
3. प्रोथ इंजन : यह अकाउंट सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) और ऑटोमैटिक इन्वेस्टमेंट के लिए है।
4. डेली एक्सपेंसेस: यह अकाउंट यूपीआई और बिल पेमेंट के लिए है। यह आपकी सेविंग से अलग होगा।

टाइमिंग का रखें ध्यान

ऊपर बताए चार पॉकेट में पैसा समय पर इन्वेस्ट कर दें। यहां टाइमिंग बहुत जरूरी है। उन्होंने कहा कि ज्यादातर लोगों की सैलरी महीने की आखिरी तारीख (30 या 31) या 1 तारीख को आ जाती है। ऐसे में हर महीने की 2 तारीख को ऑटोमैटिक ट्रॉंसफर सेट करें। महीने के बीच में खर्चों की समीक्षा करें और 25 तारीख तक अगले महीने की तैयारी कर लें।

ये तीन मंत्र काम के

पैसा कमाना एक स्किल है। पैसा बचाना एक आर्ट है और पैसे को कंपाउंड करना (ब्याज पर ब्याज कमाना) साइंस है। इन तीनों में महारत हासिल करें। ऐसे में फाइनेंशियल फ्रीडम अपने आप मिल जाएगा। पैसा का सही प्रयोग ही हमें जल्दी अमीर बना सकता है।

महीने की शुरूआत में जब फोन पर सैलरी अकाउंट में क्रेडिट होने का मैसेज आता है तो काफी खुशी होती है। लेकिन यह खुशी कुछ दिनों तक ही रहती है। 15-20 दिन गुजरने के बाद आर्थिक तंगी के हालात शुरू हो जाते हैं। ऐसा काफी लोगों के साथ होता है। मिडिल क्लास के साथ तो लगभग हर महीने यही स्थिति रहती है। 15-20 दिन बीतने के बाद चिंता सताने लगती है कि आखिर सैलरी का पैसा कहां खर्च हो गया? एक्सपर्ट ने कुछ सुझाव दिए हैं जिसमें इसका कारण और समाधान भी बताया है गया है। एक्सपर्ट के अनुसार हमसे कुछ अनजाने और अनचाहे खर्च ऐसे हो जाते हैं जिनके कारण धीरे-धीरे सैलरी का पैसा खर्च होना शुरू हो जाता है। हालात कई बार ऐसे आ जाते हैं कि सैलरी मिलने के 20 दिन बाद ही बटुआ खाली हो जाता है। समस्या यह नहीं है कि आप कितना कमाते हैं, बल्कि यह है कि आप उस पैसे को कैसे मैनेज करते हैं।

कहां गया सारा पैसा?

एक्सपर्ट्स के मुताबिक 'आपकी सैलरी अभी-अभी क्रेडिट हुई है, वो खुशी वाला अलर्ट देखकर मुस्कान आ जाती है, है ना? लेकिन 20 दिन बाद आपका यूपीआई बैलेंस आपको सोचने पर मजबूर कर देता है- सारा पैसा कहां गया? यह कहानी कई मिडिल क्लास भारतीयों की है।' आपकी लाइफ कैसी होगी यह आपके कमाने पर निर्भर नहीं होता है, बल्कि यह निर्भर करता है कि आप बचाते कितना है। उन्होंने लिखा है, 'आप 80 हजार रुपये या 2 लाख रुपये महीना कमाएं। बिना किसी सही मनी प्लान के यह पैसा आपकी सोच से भी तेज गायब हो जाता है।' उन्होंने आगे कहा कि दौलत सिर्फ कमाई से नहीं, बल्कि मैनेजमेंट और लगातार कोशिशों से बनती है।

एक लाख 3 साल की एफडी में निवेश करने पर कौन सा बैंक दे रहा है सबसे ज्यादा रिटर्न

नाँलेज **बिजनेस डेस्क**
आज हम आपको देश के अलग अलग बैंकों की 3 साल की अवधि वाली एफडी और उनमें मिलने वाले रिटर्न के बारे में बताने वाले हैं। आइए जानते हैं देश के कौन से बैंक में आप 3 साल की एफडी में निवेश कर ज्यादा रिटर्न पा सकते हैं। जब भी पैसों को निवेश करने की बात आती है, तो ज्यादातर लोग अपने पैसों को बैंक एफडी में ही निवेश करना पसंद करते हैं। इसका कारण एफडी में मिलने वाला फिक्स्ड रिटर्न और पैसों की सुरक्षा है। देश के अलग अलग बैंकों द्वारा अपनी अलग अलग अवधि वाली एफडी पर अलग अलग ब्याज दर से रिटर्न ऑफर किया जाता है। आज हम आपको देश के अलग अलग बैंकों की 3 साल की अवधि वाली एफडी और उनमें मिलने वाले रिटर्न के बारे में बताने वाले हैं। आइए जानते हैं देश के कौन से बैंक में आप 3 साल की एफडी में निवेश कर ज्यादा रिटर्न पा सकते हैं।

नाँलेज **बिजनेस डेस्क**

आज हम आपको देश के अलग अलग बैंकों की 3 साल की अवधि वाली एफडी और उनमें मिलने वाले रिटर्न के बारे में बताने वाले हैं। आइए जानते हैं देश के कौन से बैंक में आप 3 साल की एफडी में निवेश कर ज्यादा रिटर्न पा सकते हैं। जब भी पैसों को निवेश करने की बात आती है, तो ज्यादातर लोग अपने पैसों को बैंक एफडी में ही निवेश करना पसंद करते हैं। इसका कारण एफडी में मिलने वाला फिक्स्ड रिटर्न और पैसों की सुरक्षा है। देश के अलग अलग बैंकों द्वारा अपनी अलग अलग अवधि वाली एफडी पर अलग अलग ब्याज दर से रिटर्न ऑफर किया जाता है। आज हम आपको देश के अलग अलग बैंकों की 3 साल की अवधि वाली एफडी और उनमें मिलने वाले रिटर्न के बारे में बताने वाले हैं। आइए जानते हैं देश के कौन से बैंक में आप 3 साल की एफडी में निवेश कर ज्यादा रिटर्न पा सकते हैं।

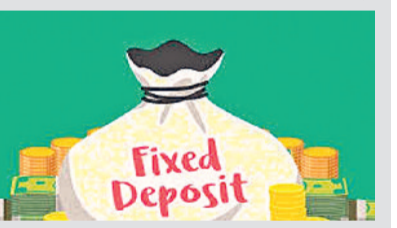


3 साल की एफडी की ब्याज दरें 6.65 प्रतिशत हैं। ऐसे में अगर आप इस एफडी में 1 लाख रुपये निवेश करते हैं तो आपको मैच्योरिटी पर कुल 1,19,950 रुपये मिलेंगे।
एक्सिस बैंक की 3 वर्ष की एफडी
प्राइवेट बैंक एक्सिस बैंक अपनी 3 साल की अवधि वाली एफडी में 6.60 प्रतिशत की ब्याज दर से रिटर्न ऑफर कर रहा है। इस बैंक

ब्याज दर से रिटर्न ऑफर करता है। ऐसे में अगर आप इस एफडी में 1 लाख रुपये निवेश करते हैं तो आपको मैच्योरिटी पर कुल 1,19,200 रुपये मिलेंगे।
एसबीआई की 3 साल की एफडी
सरकारी बैंक एसबीआई अपनी 3 साल की अवधि वाली एफडी में 6.30 प्रतिशत की ब्याज दर से रिटर्न ऑफर करता है। ऐसे में अगर आप इस एफडी में 1 लाख रुपये निवेश करते हैं तो आपको मैच्योरिटी पर कुल 1,18,900 रुपये मिलेंगे।
केनरा बैंक की 3 वर्षीय एफडी
सरकारी बैंक केनरा बैंक अपनी 3 साल की अवधि वाली एफडी में 6.25 प्रतिशत की ब्याज दर से रिटर्न ऑफर करता है। ऐसे में अगर आप इस एफडी में 1 लाख रुपये निवेश करते हैं तो आपको मैच्योरिटी पर कुल 1,18,750 रुपये मिलेंगे।

एफडी के अलावा इन 5 सरकारी स्कीम में करें पैसों का सुरक्षित निवेश

बैंक एफडी के अलावा भी सुरक्षित निवेश के लिए कई सारे विकल्प मौजूद हैं। एफडी के अलावा आप सरकार की स्मॉल सेविंग स्क्रीम में अपने पैसों का निवेश कर सकते हैं। आइए जानते हैं।



जब भी पैसों को निवेश करने की बात आती है तो ज्यादातर लोग अपने पैसों को केवल बैंक एफडी में ही निवेश करते हैं क्योंकि बैंक एफडी में पैसा सुरक्षित रहता है यानी पैसों के खो जाने का कोई डर नहीं होता है लेकिन बैंक एफडी के अलावा भी ऐसी कई स्कीम हैं, जहां लोग अपने पैसों को सुरक्षित तरीके से निवेश कर सकते हैं और काफी अच्छा रिटर्न पा सकते हैं। हम बात कर रहे हैं सरकार की स्मॉल सेविंग स्क्रीम के बारे में। स्मॉल सेविंग स्क्रीम में आपको एक निश्चित ब्याज दर से रिटर्न मिलता है, और यह सरकारी स्कीम है। ऐसे में आपको पैसों की पूरी सुरक्षा भी मिलेगी। आइए जानते हैं बैंक एफडी के अलावा आप किस-किस सरकारी स्कीम में पैसों का निवेश कर सकते हैं

नेशनल सेविंग्स सर्टिफिकेट

नेशनल सेविंग्स सर्टिफिकेट यानी एनएससी पोस्ट ऑफिस की सरकारी स्कीम है, जहां आपको 5 साल की अवधि के लिए अपने पैसों का निवेश करना होता है। नेशनल सेविंग्स सर्टिफिकेट में आपको 7.7 प्रतिशत की ब्याज दर से रिटर्न मिलता है।

सीनियर सिटीजन सेविंग्स स्क्रीम

अगर आपको उम्र 60 साल से अधिक है तो आप सीनियर सिटीजन सेविंग्स स्क्रीम में 5 सालों के लिए अपने पैसों को निवेश कर सकते हैं। इस स्कीम में 8.2 प्रतिशत की ब्याज दर से रिटर्न मिलता है। यहां आप अधिकतम 30 लाख रुपये का निवेश कर सकते हैं।

पोस्ट ऑफिस आरडी

अगर आप एक साथ निवेश न कर थोड़ा थोड़ा निवेश करना चाहते हैं तो आप पोस्ट ऑफिस की आरडी में निवेश कर सकते हैं। यहां आपको हर महीने एक निश्चित रकम निवेश करनी होती है। इस स्कीम का मैच्योरिटी पीरियड 5 साल का होता है। आरडी में 6.7 प्रतिशत की ब्याज दर से रिटर्न मिलता है।

किसान विकास पत्र

पोस्ट ऑफिस की किसान विकास पत्र यानी केवीपी स्कीम में आप अपने पैसों को 115 महीनों के लिए निवेश करके उन्हें डबल बना सकते हैं। किसान विकास पत्र स्कीम में 7.5 प्रतिशत सालाना की ब्याज दर से रिटर्न मिलता है। ऐसे में आप यहां भी निवेश कर सकते हैं।

स्मार्ट निवेशक ऐसे पहचानते हैं म्यूचुअल फंड बेचने का सही वक़्त

सुझाव **बिजनेस डेस्क**

म्यूचुअल फंड में इन्वेस्टमेंट करने की बात तो हर निवेशक करता है, कौन सा फंडसबसे अच्छा है, कौन सा फंड मैनेजर बेहतर रिटर्न दे रहा है, या कौन सा स्कीम में पैसा लगाना चाहिए। हालांकि जब बात आती है म्यूचुअल फंड बेचने की, तो ज्यादातर लोग या तो गलत समय पर बेच देते हैं या फिर कभी बेचते ही नहीं, जबकि सच यह है कि जितना जरूरी इन्वेस्टमेंट करना है, उतना ही जरूरी है सही समय पर बेचना भी। अगर आप यह नहीं जानते कि म्यूचुअल फंड कब बेचना चाहिए, तो आपका अच्छा फंड भी नुकसान में बदल सकता है। अक्सर ऐसा होता है कि मार्केट में गिरावट आते ही निवेशक घबरा जाते हैं और अपने फंड को बेच देते हैं। यह सबसे आम लेकिन सबसे बड़ी गलती होती है। जैसे कि 2008 के वित्तीय संकट के दौरान कई निवेशकों ने डरकर अपने फंड बेच दिए थे, लेकिन उस टाइम पर अगर उन्होंने धैर्य रखा होता, तो अगले पांच सालों में उनकी रकम दोगुनी हो सकती थी, तो इसलिए, मार्केट गिरने पर डरकर फंड बेचना नहीं, बल्कि धैर्य रखना जरूरी होता है।



गलत समय पर म्यूचुअल फंड बेचने से हो सकता है भारी नुकसान

कब नहीं बेचना चाहिए?
कई बार फंड कुछ महीनों के लिए खराब प्रदर्शन करते हैं तो इसका मतलब यह नहीं कि फंड खराब है। हर इन्वेस्टमेंट प्रोडक्शन के उतार-चढ़ाव के चक्र होते हैं। अगर आपने किसी उद्देश्य के लिए निवेश किया है, जैसे बच्चे की पढ़ाई, शादी या रिटायरमेंट, तो बीच में फंड बेचने की गलती न करें। इसके अलावा, सिर्फ इंसालिफ फंड न बेचें क्योंकि आपका कोई दोस्त या रिश्तेदार किसी नए फंड में निवेश कर रहा है। वेसे निवेशकों को औसतन करीब 3-4% कम रिटर्न मिल सकता है क्योंकि वे गलत समय पर फंड बेच देते हैं, यानी निवेशक खुद अपने नुकसान के जिम्मेदार बन जाते हैं।

कब बेचना चाहिए फंड?
म्यूचुअल फंड में निवेश जितना जरूरी है, उतना ही अहम है सही समय पर उसे बेचना। फंड को बेचना किसी जल्दबाजी का नहीं बल्कि एक रणनीतिक फैसला होना चाहिए। अगर आपका फाइनेंशियल टारगेट जैसे बच्चे की शिक्षा, घर खरीदना या रिटायरमेंट पूरा हो गया है, तो मुनाफा बुक कर लेना समझदारी है। वहीं, अगर कोई फंड लगातार 2-3 साल से खराब प्रदर्शन कर रहा है या अपने बैचमार्क से पिछड़ रहा है, तो इसे बदलने का समय आ गया है। जिंदगी में फाइनेंशियल बदलाव जैसे नौकरी छूटना या रिटायरमेंट की स्थिति में जोखिम कम करना चाहिए। इसके अलावा, जब मार्केट ऊंचाई पर हो, तब आर्थिक मुनाफा निकालकर अपनी पूंजी सुरक्षित करना बेहतर प्लानिंग मानी जाती है।

फंड बेचने से पहले ये रखें ध्यान
म्यूचुअल फंड बेचने से पहले जल्दबाजी में कोई कदम उठाना नुकसानदायक हो सकता है। सबसे पहले अपने फंड की पूरी समीक्षा करें, क्या फंड मैनेजर, निवेश प्लानिंग या खर्च परचना में कोई बड़ा बदलाव हुआ है? अगर हा, तो स्थिति को समझकर निर्णय लें। किसी भी कदम से पहले अपने फाइनेंशियल सलाहकार की राय जरूर लें, ताकि नुकसान से बचा जा सके। तो याद रखें, म्यूचुअल फंड एक लॉन्ग-टर्म इन्वेस्टमेंट है इसलिए बाजार के उतार-चढ़ाव में घबराने की बजाय धैर्य रखें और अपनी वित्तीय योजना से भटकें नहीं। भारतीय म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री लगातार तेजी से आगे बढ़ रही है। जुलाई 2024 से जुलाई 2025 के बीच इसका आकार 64.96 लाख करोड़ से बढ़कर 75.35 लाख करोड़ तक पहुंच गया है, जो निवेशकों के बढ़ते भरोसे को पेश करता है। यह साबित करता है कि लोग अब पारंपरिक निवेश की बजाय म्यूचुअल फंड्स को दीर्घकालिक संपत्ति निर्माण का साधन मान रहे हैं। हालांकि, केवल निवेश करना ही काफी नहीं है। सही समय पर फंड बेचना भी एक समझदार निवेशक की पहचान होती है। बाजार की स्थिति, अपने लक्ष्य और फंड के प्रदर्शन को समझकर निर्णय लेना ही सफल निवेश की कुंजी है।

सही डिसीजन पर टिका है म्यूचुअल फंड
म्यूचुअल फंड में असली सफलता सिर्फ अच्छे फंड चुनने से नहीं, बल्कि सही समय पर निर्णय लेने से आती है। बाजार में उतार-चढ़ाव सामान्य है, इसलिए गिरावट से घबराने की बजाय अपने फाइनेंशियल टारगेट पर फोकस रखें। समय पर फंड बेचना न सिर्फ आपकी पूंजी बचाता है, बल्कि मुनाफे को भी दोगुना कर सकता है।

सही डिसीजन पर टिका है म्यूचुअल फंड

म्यूचुअल फंड में असली सफलता सिर्फ अच्छे फंड चुनने से नहीं, बल्कि सही समय पर निर्णय लेने से आती है। बाजार में उतार-चढ़ाव सामान्य है, इसलिए गिरावट से घबराने की बजाय अपने फाइनेंशियल टारगेट पर फोकस रखें। समय पर फंड बेचना न सिर्फ आपकी पूंजी बचाता है, बल्कि मुनाफे को भी दोगुना कर सकता है।

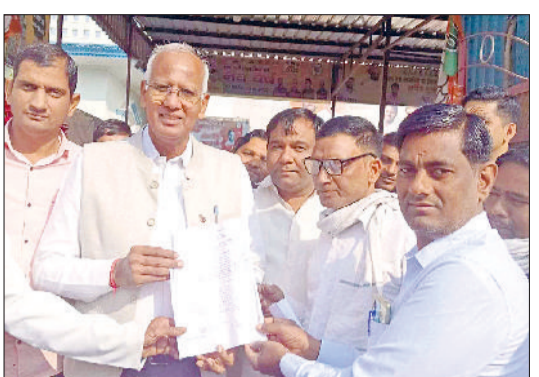
कर्मचारियों ने विधायक से मुख्यमंत्री के समक्ष पैरवी करने का आग्रह किया ग्रामीण सफाई कर्मियों ने मांगों को लेकर सौंपा ज्ञापन

ग्रामीण सफाई कर्मचारियों को रिटायरमेंट पर एकमुश्त 10 लाख रुपये व दस हजार रुपये पेंशन हर माह लागू हो

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़
मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के रविवार को नारनौल आगमन को लेकर ग्रामीण सफाई कर्मचारी यूनियन संबंधित एआईयूटीयूसी की ओर से ग्रामीण सफाई कर्मचारियों की लंबित मांगों को लेकर शनिवार को विधायक कंवर सिंह यादव को ज्ञापन सौंपा। यह ज्ञापन जिला प्रधान पवन कुमार वाल्मीकि, जिला सचिव जगदीश प्रसाद सतनाली व एआईयूटीयूसी मुकेश कुमार यादव की अगुवाई में सौंपा गया।
कर्मचारियों ने विधायक कंवर सिंह यादव से मुख्यमंत्री के समक्ष लंबित मांगों को स्वीकार किए जाने की पैरवी का आग्रह



महेंद्रगढ़। शहर में प्रदर्शन करते ग्रामीण सफाई कर्मचारी व विधायक कंवर सिंह यादव को ज्ञापन सौंपते हुए।



फोटो: हरिभूमि

ये रहे मौजूद
इस मौके ब्लाक कमीना प्रधान दीपक, सचिव महेश कुमार, प्रेस सचिव रवि, कोषाध्यक्ष सोनू, महेंद्रगढ़ ब्लॉक प्रधान राजेंद्र, सचिव मुकेश व सत्यनारायण सहित अनेक कर्मचारी उपस्थित रहे।

पिछले 18 सालों से लगातार काम कर रहे हैं, लेकिन ग्रामीण सफाई कर्मचारियों को न ही अभी तक सरकारी कर्मचारी का दर्जा दिया गया है और न ही न्यूनतम वेतन 26 हजार रुपये लागू किया गया है, जिससे इस बढ़ती महंगाई में परिवार का जीवनयापन बेहद मुश्किल है।
हमें सामाजिक सुरक्षा के दायरे से भी वंचित हैं। ग्रामीण सफाई कर्मचारियों को रिटायरमेंट पर एकमुश्त 10 लाख रुपये व दस हजार रुपये पेंशन हर माह लागू हो। इसके अलावा सरपंचों के अनावश्यक हस्तक्षेप से आए दिन हटाने की धमकी मिलती है, इसलिए हमें नौकरी सुरक्षा की भी गारंटी दी जाए।

किया। जिला प्रधान ने बताया कि ग्रामीण सफाई कर्मचारी पिछले 18 वर्षों से गांव में साफ-सफाई कार्य कर गांव में स्वच्छता अभियान की रीढ़ है और गांवों को साफ-सुथरा कर बीमारियों से बचाव में सफाई कर्मियों के योगदान को देखते हुए सरकारी कर्मचारी का दर्जा दिया जाना न्यायसंगत मांगों में शुमार है। इसके बावजूद इसके 18 वर्षों से लगातार संतोषजनक सेवाओं के

गैर-कानूनी तरीके से नौकरी से हटाकर एक गरीब दंपति की रोजी-रोटी छीन ली, जिनकी आजीविका का यही एकमात्र साधन था और उनके पांच बच्चों का जीवन संकट में पड़ गया है। यह गरीब चिंतामण परिवार के साथ सरासर नाइसामी है, इसके लिए उसे नौकरी पर बहाल किया जाए।
ज्ञापन में कहा गया है कि ग्रामीण सफाई कर्मचारी बेहद गरीब परिवारों से हैं और

करंट लगने से एक व्यक्ति की मौत
नारनौल। गांव रामबास में करंट लगने से 67 वर्षीय एक व्यक्ति की मौत हो गई। व्यक्ति सुबह नहाने के लिए पानी ले रहा था। इस दौरान बाल्टी में लगी रॉड में करंट आ गया। सूचना मिलने पर पुलिस ने शव का नागरिक अस्पताल से पोस्टमॉर्टम करवा परिजनों को सौंप दिया। गांव रामबास निवासी करीब 67 वर्षीय रतिराम बीते कल सुबह अपने घर में नहाने के लिए गर्म पानी ले रहा था। इस दौरान जब वह बाल्टी से पानी लेने लगा तो बाल्टी में लगी रॉड में करंट आ गया। इससे उनकी करंट लग गया। करंट लगने के कारण रतिराम बेहोश होकर वहां पर गिर गया। उसके बेहोश होकर गिरने पर परिजनों ने उसको उठाया तथा उपचार के लिए तुरंत नागरिक अस्पताल पहुंचाया। जहां पर डॉक्टरों ने रतिराम को मौत घोषित कर दिया। मृतक के पुत्र नरेश कुमार ने बताया कि उसके पिता कर्मचारी थे तथा खेतीबाड़ी करते थे। उनके एक लड़का व चार लड़कियां हैं। सभी की शादी हो चुकी है।



नारनौल। बैठक में भाग लेते हुए।
फोटो: हरिभूमि

प्रगतिशील प्रजापति संगठन की हुई बैठक
नारनौल। प्रगतिशील प्रजापति संगठन की एक आवश्यक बैठक संगठन के कार्यालय स्थित नरसैरपुर में संपन्न हुई। बैठक में सभी पदाधिकारी ने फेसला लिया कि 16 नवंबर को सीएस नायब सिंह सैनी के नारनौल आगमन पर उनका स्वागत किया जाएगा तथा उनके समक्ष संगठन, समाज के विकास व उन्नति के लिए कुछ प्रस्ताव पेश करने का फेसला लिया गया। इसी मौके पर प्रधान बलवान लाल, उपप्रधान लालराम, उपप्रधान रामसिंह, मोहनसिंह, सीताराम, कृष्ण कुमार नंबरदार, फूलचंद, रमेश एडवोकेट आदि उपस्थित थे।



कनीना। मिठाई बांटकर खुशी जताते व्यापारी। फोटो: हरिभूमि

बिहार चुनाव में एनडीए की जीत पर बांटी
कनीना। बिहार में एनडीए की सरकार बनने पर भाजपा कार्यकर्ताओं ने मिठाई बांटकर खुशी जताई है। व्यापार मंडल के वरिष्ठ नेता मनीष गुप्ता ने कहा कि बिहार में एनडीए की पूर्ण बहुमत मिलने के बाद बिहार में भी सत्ता परिवर्तन का रास्ता खुल गया है। उन्होंने कहा कि देश के प्रशासकीय नरेंद्र मोदी की नीतियों के आगे विपक्षी पार्टियों के होस्त परास्त हो रहे हैं। देश में तेजी से विकास हो रहा है। इस मौके पर व्यापार मंडल एवं भाजपा के कार्यकर्ता उपस्थित थे।

भारत को जानो प्रतियोगिता के विजेता हुए सम्मानित
नारनौल। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कनीना में विद्यालय स्तर की भारत को जानो प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों को शनिवार विद्यालय प्राचार्य सुरेश कुमार ने स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। इस संबंध में प्रवक्ता डा. जितेंद्र भारद्वाज ने बताया कि भारत को जानो प्रतियोगिता में विद्यालय स्तर पर कनिष्ठ वर्ग में कक्षा छह से आठ एवं वरिष्ठ वर्ग में कक्षा नौवीं से 12वीं के विद्यार्थियों ने भाग लिया, जिसमें कनिष्ठ वर्ग में कक्षा आठ के छात्र नरेश ने प्रथम, कक्षा सात के विशाल ने द्वितीय तथा कक्षा आठ के वीरने ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। वहीं वरिष्ठ वर्ग में कक्षा दसवीं के दीपानु ने प्रथम, कक्षा 12वीं के शब्नी ने द्वितीय एवं कक्षा दसवीं की पेशिका ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

अहीर रेजिमेंट और 120 बहादुर में अहीर शब्द शामिल किया जाए: पूर्व सांसद

पूर्व सांसद चौधरी बृजेंद्र सिंह के नेतृत्व में नारनौल से चलकर महेंद्रगढ़ पहुंची जनसन्मोचना यात्रा, कांग्रेस के बड़े नेता नहीं हुए शामिल
हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़



महेंद्रगढ़। पत्रकारवार्ता करते पूर्व सांसद एवं यात्रा संयोजक बृजेंद्र सिंह।

अहीर रेजिमेंट और 120 बहादुर फिल्म के टाइटल में अहीर शब्द शामिल करना अहीरवाल इलाके की मांग जायज है तथा इन मांगों को लागू किया जाना चाहिए। यह विचार पूर्व सांसद एवं सद्भावना यात्रा के संयोजक बृजेंद्र सिंह ने यादव सभा में आयोजित पत्रकारवार्ता में व्यक्त किए। चौधरी बृजेंद्र सिंह ने अहीर

रेजिमेंट का समर्थन करते हुए सन 1962 में हुए रेजांगला युद्ध में जो 120 वीर शहीद हुए, उनमें सर्वाधिक अहीर समाज के थे।
इस युद्ध को लड़ने में जिस अदम्य साहस का परिचय दिया, वह अतुलनीय है। यहाँ के अहीरों ने आजादी की लड़ाई ही नहीं, देश की

आजादी के बाद हुए युद्धों में भी स्वर्णिम इतिहास रचा है और सीमाओं की रक्षा करते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया है। उन्होंने बताया कि आज ही महेंद्रगढ़ में रेजांगला पार्क का शिलान्यास किया गया है तथा वह इसका सम्मान करते हैं। यह शहीदों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि का प्रतीक होगा। इस मौके पर पूर्व सांसद के पिता पूर्व मंत्री चौधरी बिरेंद्र सिंह, कांग्रेस के जिला प्रधान सत्यवीर झूकिया, महिला प्रधान राजवंती यादव, बार के पूर्व प्रधान एडवोकेट मंजीत सिंह यादव, पूर्व पार्षद डा. तरुण, भगवान सिंह झूक समेत सैकड़ों कार्यकर्ता मौजूद रहे।



नारनौल। कर्मशाला प्रबंधक संदीप कुमार का स्वागत करते पूर्व प्रधान अनिल भीलवाड़ा व अन्य। फोटो: हरिभूमि

रोडवेज कर्मशाला प्रबंधक ने संमाला कार्यभार
नारनौल। रोडवेज बस डिपो में कर्मशाला प्रबंधक के तौर पर संदीप कुमार न्यू जॉइनिंग की है, जोकि पहले मिसाली डिपो में फोरमेन के पद पर कार्यरत थे। संदीप कुमार का नारनौल डिपो में उपाइन्ड करने पर कर्मचारियों ने उनको गुलदस्ता मेंटकर स्वागत किया। कर्मशाला प्रबंधक ने कर्मचारियों को आश्वासन दिया कि वह आने वाले समय में नारनौल डिपो के कर्मचारियों, रोडवेज विभाग और जन्मिह के लिए मिलजुलकर अच्छे से अकेले कार्य करेंगे। कर्मशाला प्रबंधक के स्वागत में नारनौल डिपो के पूर्व प्रधान अनिल भीलवाड़ा, संजय नीरपुर, प्रीतम बागड़ी, कुलदीप मास्टर, दलजोत, सुरेंद्र वकील, प्रीतम नांगल सिरोही, विकास भुगारका, सुंदर बेवल, नरेश, दयानंद आदि कर्मचारी मौजूद रहे।



कोसली। विद्यार्थियों को गर्म कपड़े वितरित करते गांव के सरपंच व अन्य।

विद्यार्थियों को वितरित किए गर्म कपड़े
कोसली। राजकीय उच्च विद्यालय लिसाना के छात्र-छात्राओं को सर्दी के मौसम की शुरुआत में गांव के सरपंच जयसिंह गांव के विपिन कुमार द्वारा गर्म कपड़े वितरित किए। विद्यालय के मुख्य अध्यापक विनोद कुमार ने कहा कि गांव के सरपंच जयसिंह वह विपिन यादव द्वारा गत वर्ष भी छात्र-छात्राओं को गर्म कपड़े वितरित किए थे जिसके लिए वह छात्र-छात्राओं की ओर से उनका आभार व्यक्त करते हैं कि वह इसी प्रकार समाज सेवा के कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर भाग लें और दिन-दर-दिन रात-दर-रात चौकशी उन्नति करें इसके लिए राजकुमार देवेन्द्र सिंह कृष्ण कुमार मुकेश कुमार सरदर फूलम पंचाशत समिति सदस्य बलदेव सतारि कृष्ण सरयवान सहित अन्य लोग मौजूद थे।

पिता की पुण्यतिथि पर गोशाला में लगाई सवामणी

नारनौल। गो सेवा मंडल के सानिध्य में सुरेश यादव ने अपने स्वर्गीय पिता श्रीराम यादव की तीसरी पुण्यतिथि पर गोमाता के लिए 35 किटल हरी सब्जी की सवामणी श्री अनाथ गोशाला नारनौल में लगाई। सुरेश यादव ने बताया कि अपने बड़े बुजुर्गों की पुण्यतिथि पर गोमाता को हरा चारा व हरी सब्जी खिलाने से आत्मा को शांति प्राप्त होती है। संस्थापक मुकेश वालिया ने बताया कि मंडल द्वारा पिछले करीब चार वर्षों में अब तक 1320 सवामणी गोमातों के सहयोग से लगाई जा चुकी है। प्रधान सतपाल यादव ने कहा कि गोमाता सवामणी करने से मग के सभी विकार दूर होते हैं तथा घर में खुशियां आती हैं। बेजुजान गोमाता की सेवा से अधिक पुण्य कर्म और कोई नहीं हो सकता।

विधायक ने कार्यकर्ताओं की ली बैठक

हरिभूमि न्यूज, महेंद्रगढ़
विधायक कंवर सिंह यादव ने अपने कार्यालय पर कार्यकर्ताओं की एक बैठक लेकर 16 नवंबर को नारनौल में होने वाले राज्य स्तरीय कार्यक्रम की तैयारियों की समीक्षा की। विधायक ने बताया कि महाराज शूर सैनी की जयंती के मुखातिब मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी शिरकत करेंगे। जिसके लिए सभी व्यवस्थाओं को सुचारु रूप से पूरा करने के निर्देश दिए गए। महेंद्रगढ़ विधानसभा से 50 वर्षों की व्यवस्था की गई। जो सुबह नौ बजे महेंद्रगढ़ से काफिले में एक साथ रवाना होंगे। विधायक ने कार्यकर्ताओं से कहा कि वे अधिक से अधिक संख्या में लोगों को कार्यक्रम तक पहुंचाने के लिए सक्रिय भूमिका निभाएं, ताकि क्षेत्र के विकास से जुड़ी योजनाओं का लाभ आम जनता तक पहुंच सके। इस मौके पर भाजपा जिला महामंत्री योगेश शास्त्री, मंडल



महेंद्रगढ़। कार्यकर्ताओं को दिशा-निर्देश देते विधायक।

अध्यक्ष नांगल सिरोही अशोक कुमार, मंडल अध्यक्ष महेंद्रगढ़ संदीप बचीनी, रवि शेखावत, प्रवीण कुमार, अधिवक्ता मोती सिंह, मार्केट कमेटी चेयरमैन भागीरथ शेखावत, कृष्ण देवनगर सरपंच, रणधीर सिंह आदिलपुर, कृष्ण ठेकेदार, डॉ. महेश, पंकज बुचोली, दीपक बुचोली व सूरत सिंह आदि बीजेपी कार्यकर्ता मौजूद रहे।

जनजातीय गौरव दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

नारनौल। राजकीय महिला महाविद्यालय में जनजातीय गौरव दिवस मनाया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. गीता यादव ने की। डॉ. गीता यादव ने कहा कि यह दिवस भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में मनाया जा रहा है। जनजातीय गौरव दिवस का उद्देश्य जनजातियों समुदाय की संस्कृति, परंपरा और योगदान को सम्मानित करना है। यह दिवस जनजातियों समाज के लोगों को उनके अधिकारों और पंचांग के प्रति जागरूक करने के लिए मनाया जाता है। इस मौके पर विनोद लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें प्रथम पुरस्कार अन्नू को, द्वितीय पुरस्कार लक्ष्मी को तथा तृतीय पुरस्कार तमज्जा और अंकिता चौधरी को संयुक्त रूप से प्रदान किया गया।

विद्यार्थी हमारे देश के भविष्य: बलजीत यादव

■ बाल दिवस पर बच्चों ने सुंदर प्रस्तुतियां दी
हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी



रेवाड़ी। कार्यक्रम वीफ गेस्ट का स्वागत करते हुए स्कूल स्टाफ। फोटो: हरिभूमि

भारतीय जनता पार्टी जिला उपाध्यक्ष बलजीत सिंह यादव ने विश्वकर्मा सॉनियर सेंकेडरी स्कूल में बाल दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में कहा कि आज के बच्चे ही हमारे देश का भविष्य हैं। आप लोगों में से ही कल राजनेता, डॉ, इंजीनियर और शिक्षक बनकर देश का निर्माण करेंगे। उन्होंने कहा कि आज हम

संकल्प लेकर जाएं कि अपने से बड़ों, माता पिता और गुरुजनों का आदर करेंगे। डर कर नहीं बलिक्

आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ेंगे। अंदर के सपनों को कभी छोटा नहीं होने देंगे। पढ़ाई को नंबरों के लिए

नहीं कुछ नया सीखने के लिए करेंगे। सार्वजनिक संपत्ति को कभी नुकसान नहीं पहुंचाएंगे।

सरकारी अस्पतालों में 1100 नए डॉक्टरों की नियुक्ति की गई

प्रदेश में हेल्थ इंफ्रास्ट्रक्चर को किया जा रहा मजबूत: आरती

■ दवा वितरण के कार्य को सुचारु किया गया
हरिभूमि न्यूज ▶▶ कोसली



कोसली। किसान भवन में मौजूद स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव व अन्य। फोटो: हरिभूमि

स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव ने कहा कि हरियाणा प्रदेश में चिकित्सा सुविधाओं का विस्तार व आम जनता के लिए सभी तरह की मेडिकल सेवाएं सुलभ करवाने के लिए सरकार गंभीरता से काम कर रही है। सरकारी अस्पतालों में 1100 नए डॉक्टरों की नियुक्ति की गई है। इसके अलावा दवा वितरण के कार्य को सुचारु किया गया है। किसान

भवन परिसर में आज कोसली मार्केट कमेटी के चेयरमैन महेश

यादव और वाइस चेयरमैन दिनेश गोयल को पदभार ग्रहण करवाने के

पश्चात स्वास्थ्य मंत्री स्थानीय मीडिया कर्मियों से बातचीत कर रही

दवाइयों का सीएमओ के पास स्टॉक होना आवश्यक

उसके बाद सब डिजिटल लेवल के हॉस्पिटल, सीएचसी, पीएचसी तथा सब हेल्थ सेंटरों पर ध्यान दिया जाएगा। स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार की प्रक्रिया जारी है। दवाइयों की कमी को दूर किया जा रहा है। विभाग में इसके लिए एक अलग से पोर्टल बनाया हुआ है। जिसमें दर्शाई गई दवाइयों का सीएमओ के पास स्टॉक होना आवश्यक कर दिया गया है। आधुनिक मशीनों को बाइर से मंगवा कर सरकारी अस्पतालों में लगवाया जा रहा है। उन्होंने बताया कि कोसली में भी जल्द रेडियोलॉजिस्ट व स्पेशलिस्ट चिकित्सकों की कमी को दूर किया जाएगा। मंत्री ने बताया कि सहायक नगर गांव के नर्सिंग कॉलेज में अगले साल से कक्षाएं विधिवत तौर पर शुरू कर दी जाएंगी। अभी वहां दवागार विकास का कार्य करवाया जा रहा है। स्वास्थ्य मंत्री ने विधायक अनिल यादव के भी काम की तारीफ करते हुए कहा कि वे पूरी लगन से हलका के विकास के लिए जुटे हुए हैं। इस मौके पर भाजपा जिलाध्यक्ष डा. वंदना पोपली, एसडीएम विजय कुमार यादव, जिला कृषि विपणन अधिकारी सत्य प्रकाश, मार्केट कमेटी सचिव नरेंद्र सिंह, अशोक लूथी सहित गणनायक नागरिक मौजूद थे। उन्होंने कहा कि पहले उनकी को समुचित चिकित्सा संसाधन उपलब्ध करवाने पर है।

हरिभूमि बम्पर इनामी योजना-2025 के विजेताओं के नाम

- ग्यारहवां पुरस्कार (इलेक्ट्रिक कैबल-100 नग)**
- श्री अनव कुमार सुप्रु श्री सुंदर लाल, 1910/30, न्यू चिन्हेट कॉलोनी, रोहतक
 - श्री प्रशांत सुप्रु प्रमोद, नेहरू कॉलोनी, रोहतक
 - श्री मदन गोपाल सवदेवा सुप्रु मुलधारान सचदेवा, म. नं. 309/16, प्रताप मोहल्ला, रोहतक
 - जगवीर सुप्रु श्री देशराम, गांव मोहम्मदपुर, डुलोत जाट, अंटोली, महेंद्रगढ़
 - रोहित बंसल सुप्रु श्री दीपक बंसल, वार्ड नं. 6, दीवान रोड, झज्जर
 - जय नायण सुप्रु श्री दुर्गा प्रसाद, साल्हावास, झज्जर
 - दर्शन देवी धर्मपत्नी धर्मवीर सिंह, गांव दुजाना, बेरी, झज्जर
 - रान लाल सुप्रु श्री समसुराम नांगल चौधरी, महेंद्रगढ़
 - श्री रामचंद्र सुप्रु रामभागत, अमृत कॉलोनी, वार्ड 22, रोहतक
 - श्री भगवत सिंह सुप्रु श्री बनवारी लाल, नरदीक रेलवे स्टेशन, वार्ड नं. 2, (आटा चक्की) कलानी, रोहतक
 - दिव्या सुप्रु श्री परवोन, जलानगढ़, बेरी, झज्जर
 - सुरेश कुमार सुप्रु श्री बलराम, साल्हावास, झज्जर
 - निहारिका शर्मा पत्नी दीपक शर्मा निवासी 15/40, 5 बिल्डिंग, जटवाड़ा मोहल्ला, बहादुरगढ़
 - महेन्द्र सिंह सुप्रु श्री भागचंद, दुजाना, बेरी, झज्जर
 - महावीर सिंह सुप्रु श्री जगें राम, कबलान, झज्जर
 - जिवा पुत्री श्री अमित निवासी ओल्ड बस स्टैंड, गुजरी को ढाणी, भिवानी
 - शर्मिता पत्नी श्री विवेक निवासी ओल्ड बस स्टैंड, भिवानी
 - शिवबाग सिंह सुप्रु श्री जगत सिंह, निवाय, साल्हावास, झज्जर
 - राधे श्याम सुप्रु स्व. श्री हजारी लाल, गांव व डा. नन्दरामपुर बांस, रेबड़ी
 - मदन लाल वामा सुप्रु श्री जगदेश प्रसाद म. नं. 4, गली नं. 3/1, सरस्वती विहार, कालका रोड, रेवाड़ी
 - प्रिंस सुप्रु श्री अमन, भागत, मातनगढ़, झज्जर
 - श्री रणवीर सिंह सुप्रु श्री राम, गांव व डा. नुवाहेड़ी, झज्जर
 - मान सिंह सुप्रु श्री चन्द्रभान, गांव पलड़ा, बेरी, झज्जर
 - दयानन्द सुप्रु श्री मंगलराम, गांव लूखी, कोसली, रेवाड़ी
 - धर्मवीर सिंह सुप्रु श्री सुरजभान, नारनौल, महेंद्रगढ़
 - अमन सोलंकी पुत्र श्री प्रदीप सोलंकी, श्री महेंद्र सिंह सुप्रु वेडो सिंह, गांव व डा. पालोटी, रोहतक
 - मधुवाला पत्नी श्री जय भवानी निवासी मकान नं. 840/13, गली नं. 10 भगत सिंह कॉलोनी, बहादुरगढ़
 - मनीष कुमार पुत्र श्री राजेंद्र सिंह निवासी गांव डबोवाली काली, बहादुरगढ़, जिला झज्जर
 - तेजवीर ठाठी पुत्र श्री अजोयम निवासी गांव व डाकखाना सांखील, बहादुरगढ़, जिला झज्जर
 - विनोद कुमार पुत्र श्री मनोहर लाल गांव व डाकखाना सांखील, निजल चखड़ी दारो
 - मन सुप्रु श्री रिंकु, दाइली, बाढ़ड़ा, चखड़ी दारो
 - सुनीता पत्नी मुकेश निवासी रामगढ़, परमाना रोड, गली नं. 4, बहादुरगढ़, जिला झज्जर
 - सुरेंद्र कुमार सैन पुत्र श्री सन्ज निवासी गुजरी को ढाणी, पुराना बस स्टैंड, भिवानी
 - श्री महेंद्र सिंह सुप्रु वेडो सिंह, गांव व डा. पालोटी, रोहतक
 - मनक पुत्र श्री जितन कुमार निवासी गांव हनुमान ढाणी, जिला भिवानी
 - सुलेखा पत्नी श्री हरिओम निवासी गांव रोहद, बहादुरगढ़, जिला झज्जर
 - श्याम करण पुत्र श्री सोनी लाल निवासी छिन्ना कॉलोनी, गली नं. 5, बहादुरगढ़, जिला झज्जर
 - दशराम पुत्र श्री कान्हाय निवासी आर्य नगर, गली नं. 2, बहादुरगढ़, जिला झज्जर
 - देवेन्द्र कुमार सुप्रु श्री राजिन्द्र सिंह, गांव व डा. शोशावाला, दारो
 - समीर पुत्र श्री प्रदीप निवासी ओल्ड बस स्टैंड, गुजरी को ढाणी, भिवानी
 - अमेश पुत्र श्री हव सिंह निवासी 12/410, सैनी पुण, बहादुरगढ़, जिला झज्जर
 - हवा सिंह पुत्र श्री लखोयम निवासी गांव व डाकखाना गोवाल कलौ, बदली, झज्जर
 - अशोक वामा पुत्र श्री बलवान सिंह निवासी सुहागवा, लोहारू, जिला भिवानी
 - श्री शंकरा कुमर सुप्रु ब्रह्मजीत सिंह, गांव व डा. बोहर, रोहतक
 - परवीन कुमार सुप्रु श्री दिलबाग सिंह गांव व डा. लोहारूहेड़ी, बहादुरगढ़, झज्जर
 - श्री वीर सुप्रु धीर सिंह, 822, दरमान मोहल्ला, रोहतक
 - अशोक हर्ष भित्तल पुत्र श्री रविन्द्र कुमार निवासी मकान नं. 5, नन्दरीक लिबर्टी होम्स, शिव नगर कालोनी, भिवानी
 - श्री अंशु सुप्रु श्री रामफल, खरक जाटान, बैसी, तह. महन, रोहतक
 - मोहित सिंह सुप्रु श्री कन्हैया लाल, गांव लोहारूहेड़ी, बहादुरगढ़, झज्जर
 - वीर भान पुत्र श्री काली चरण निवासी मकान 802/19, आर्य नगर, रोहतक

शेष विजेताओं की सूची अगले अंक में देखें

आवश्यक सूचना :

- सभी पुरस्कारों का वितरण 1 दिसम्बर 2025 से किया जाएगा।
- पुरस्कार संख्या 1 से 3 तक के विजेताओं को हरिभूमि मुख्यालय, नगदीक इडस पब्लिक स्कूल, रोहतक पर पुरस्कार प्राप्त हो सकेगा।
- पुरस्कार संख्या 4 से 13 उपहार के विजेताओं को संबंधित हरिभूमि कार्यालय अमिकर्मा से पुरस्कार प्राप्त हो सकेगा।
- यदि किसी भी पुरस्कार पर सरकार के नियमानुसार टी.डी.एस. लागू होगा तो विजेता को लागू टी.डी.एस. की राशि हरिभूमि कार्यालय से एडवांस में जमा करनी होगी।
- पुरस्कार प्राप्त करने के लिए आपको अपने साथ पुरस्कार विजेता की फोटो आईडी की फोटो प्रति जमा करनी होगी। नूतन फोटो को मिलान हेतु साक्षात् नया फोटो अनिवार्य है।
- अधिक जानकारी के लिए आप निम्न नम्बरों पर हरिभूमि प्रसार विभाग में प्रातः 11.00 से सायं 4.00 बजे तक सम्पर्क कर सकते हैं :- फोन : 9253681019-20

- कार्यालय पता -
हरिभूमि, थॉप नं. 47, इम्बूवमेंट ट्रेड मार्केट, गिवाणी
फोन नं. : 8814999151, 9253681005, 8295157800

खबर संक्षेप

निबंध लेखन में निकिता व पोस्टर में श्रुति प्रथम

लोहारू। शनिवार को चौधरी बंसीलाल राजकीय महाविद्यालय परिसर में महिला प्रकोष्ठ के तत्वावधान में महिला सशक्तिकरण विषय निबंध लेखन और पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया। कार्यकारी प्राचार्य डॉ. सुखवीर की अध्यक्षता में आयोजित प्रतियोगिता में छात्राओं ने हिस्सा लिया और प्रतिभा दिखाई। डॉ. सुखवीर सिंह ने बताया कि दो परिवारों को संस्कारों से सींचने वाली महिलाएं अब किसी भी क्षेत्र में कम नहीं हैं, देश की बेटियों ने अपनी प्रतिभा से खेल, शिक्षा, समाज सेवा और राजनीति सहित हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है।

नशामुक्ति अभियान में छात्राओं ने लिया हिस्सा

बाढ़डा। राजकीय महिला महाविद्यालय बाढ़डा में नशा-मुक्ति जागरूकता अभियान के अंतर्गत पोस्टर एवं स्लोगान प्रदर्शनी का सफल आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम महाविद्यालय के कार्यकारी प्राचार्य डा. सुबे सिंह के दिशा-निर्देशन तथा एटी-ड्रग अवेयरनेस सेल के संयोजक प्रो आनंद कुमार के संचालन में संपन्न हुआ।

जनजाति गौरव दिवस पर हुई विचार गोष्ठी

भिवानी। शनिवार हांसी गेट, भिवानी स्थित सेंट किरोडीमल शिक्षण संस्थान में आयोजित विचार गोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसका मुख्य विषय जनजाति गौरव दिवस का महत्व रहा। भिवानी वनवासी कल्याण आश्रम से सेवा निवृत्त मुख्याध्यापक जगमोहन, चंद्रप्रकाश, सामाजिक समरसता गतिविधि से ब्रिज मोहन कौशिक, बहन अनिता शास्त्री वक्ता रहे।

विद्यार्थियों को एलपीजी सुरक्षा से अवगत करवाया

बाढ़डा। गांव डोहका के एक्वेस्ट्र इन्टरनेशनल स्कूल में राज गैस एजेंसी बाढ़डा के सहयोग से एलपीजी से टी अवेयरनेस प्रोग्राम एवं कुकिंग प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया। स्कूल परिसर में एलपीजी सुरक्षा जागरूकता के तहत आयोजित कार्यक्रम में सेल्स अधिकारी शशिकांत व संचालक नीलम देवी की अध्यक्षता में पहुंचे मु2य अतिथि धीरज साहू टीएम पिपियाला बॉटलिंग प्लांट ने विद्यार्थियों को दैनिक जावन का अभिन्न हिस्सा रहे एलपीजी के प्रयोग के बारे में आवश्यक जानकारी सांझा की।

विज्ञान ने हमारे जीवन को बनाया सरल: गौड़

भिवानी। कोट रोड स्थित डीएवी सीनियर सैकेण्डरी स्कूल में जिला शिक्षा विभाग के निदेशानुसार खण्ड स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी में मॉडल मेकिंग, पोस्टर मेकिंग व रोल प्लेय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्यअतिथि भिवानी खण्ड शिक्षा अधिकारी डा. अनिल गौड़ थे। कार्यक्रम संचालक प्रवक्ता अनिल अरोड़ा व नरेन्द्र शर्मा थे। कार्यक्रम में 42 सरकारी स्कूलों के 175 विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रदर्शनी का अवलोकन करने के बाद डा. अनिल गौड़ ने कहा कि सरकारी स्कूलों व विशेषकर ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों में अदभुत प्रतिभा देखने को मिली।

सुरेंद्र सिंह किसान व मजदूरों के थे सच्चे रखवाले



भिवानी। स्व. सुरेंद्र सिंह के चित्र पर पुष्प अर्पित करते हुए।

भिवानी। धानक जनकल्याण मंच के प्रदेश अध्यक्ष सदीप खरकिया ने कहा कि पूर्व कृषि मंत्री स्व. चौधरी सुरेंद्र सिंह किसान मजदूर के सच्चे रखवाले थे उन्होंने तमाम उन इमन दोनों वर्गों की मलाई के लिए अनेक सामाजिक एवं जनहित के कार्य किए गए थे जिसको लेकर आज भी प्रदेश का किसान मजदूर चौधरी सुरेंद्र सिंह को याद कर रहा है आज उनकी जयंती के अवसर पर गांव खरक कला में उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें याद किया गया सदीप खरकिया ने कहा कि चौधरी सुरेंद्र सिंह का संपूर्ण जीवन संघर्ष, सरलता, समर्पण और निष्पट लोकसेवा का अनुभव उदाहरण रहा है। आपने अपने कर्म, कृतित्व और कुशल नेतृत्व से न केवल राजनीति को नई दिशा दी, बल्कि जनसेवा को अपने जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य बनाया।

विद्यांतरिक्ष स्कूल भिवानी में आयोजित हो रहे खेल मुकाबले

3000 बच्चों व 1500 टीचर्स के साथ खेल महाकुम्भ की शुरुआत

सांसद धर्मबीर सिंह व विधायक घनश्याम सर्राफ रहे मौजूद

हरिभूमि न्यूज ►► भिवानी

प्राइवेट स्कूल वेलफेयर एसोसिएशन हरियाणा का पांचवां खेल महाकुम्भ आज विद्यांतरिक्ष सीनियर सेकेंडरी स्कूल भिवानी में शुरू हुआ। दी दिवसीय आयोजन में तीन हजार बच्चे और 1500 टीचर्स भाग ले रहे हैं। आयोजन में उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में भिवानी महेंद्रगढ़ के सांसद चौधरी धर्मबीर सिंह तथा पूर्व मंत्री और भिवानी विधायक घनश्याम सर्राफ थे। अतिथियों का स्वागत परंपरागत हरियाणवी तरीके से किया गया। सभी अतिथियों ने दीप प्रज्वलन कर समारोह की शुरुआत की इसके बाद टॉच मैराथन का आयोजन किया गया। भिवानी जिले के प्राइवेट स्कूलों से आए बच्चों में से नेशनल लेवल के खिलाड़ियों ने टॉच मैराथन को पूरा किया।



भिवानी। 15 बीडब्ल्यूए.28: दीप प्रज्वलित करके कार्यक्रम का शुभारंभ करवाते विधायक घनश्याम सर्राफ।

प्रदेश अध्यक्ष रामअवतार शर्मा ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने एसोसिएशन की विभिन्न गतिविधियों के बारे में सभी अतिथियों को अवगत करवाया। उन्होंने कहा कि हरियाणा में 60 प्रतिशत बच्चे प्राइवेट स्कूलों में पढ़ते हैं। प्राइवेट स्कूल वेलफेयर एसोसिएशन हरियाणा का हमेशा यह प्रयास रहता है कि न सिर्फ स्कूल के हितों का ध्यान रखा जाए बल्कि प्राइवेट स्कूलों में काम करने वाले टीचर्स और वहां पढ़ने वाले बच्चों के सर्वांगीण विकास का भी पूरा ध्यान

रखा जाए। इसी कड़ी में एसोसिएशन यह वार्षिक खेल महाकुम्भ का आयोजन करता है। यह खेल महाकुम्भ का पांचवां संस्करण का आयोजन किया जा रहा है। हर बार बच्चों और टीचर्स को सहभागिता बढ़ जाती है, उन्होंने सभी अतिथियों का आभार जताया। रामअवतार शर्मा ने अतिथियों को बताया कि प्राइवेट स्कूल एसोसिएशन सिर्फ खेल महाकुम्भ का आयोजन नहीं करता बल्कि आने वाले सभी बच्चों और स्टाफ के लिए नियुक्त भोजन की भी व्यवस्था करता है।

खेलों का महत्व बताया
चौधरी धर्मबीर सिंह ने कहा कि बच्चों के जीवन में खेलों का विशेष महत्व है और हर बच्चे को बड़-चढ़कर भाग लेना चाहिए। जब भी किसी तरह का स्पोर्ट्स कंपटीशन होता है तो यह न सिर्फ बच्चों की शारीरिक सेहत ठीक रखते हैं बल्कि बच्चों को मानसिक रूप से भी मजबूत बनाते हैं और उन्हें मजबूत के लिए तैयार करते हैं। यदि बच्चा अनुशासन सीख लेता है तो वह जीवन में कोई भी लक्ष्य हासिल कर सकता है। उन्होंने एसोसिएशन और रामअवतार शर्मा को बधाई देते हुए कहा कि इतने बड़े लेवल पर खेल महाकुम्भ का आयोजन करना एक उपलब्धि है।

ये रहे मौजूद

इंदीवर शर्मा डीएसपी, हरियाणा पुलिस, सदीप शर्मा डीएसपी, विजिलेंस, हरियाणा पुलिस और अनूप कुमार डीएसपी सेकंड भिवानी में भी बच्चों को आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर उपस्थित होने वाले स्कूल संचालकों में अनिल डागर, डॉ आरती, सुरेश सिवाव, बदन सिंह, नरेश ठुकराल, संजीव श्योरण, सुमन श्योरण, कल्पे मिरग, श्रद्धानंद शर्मा, रामकुमार बंगालिया, प्रवीण सोनी, अजय गुप्ता, सुमेर लमोरिया, जोगिंदर सांगवान, मीना नरवाल, राजबाला कौशिक, आस्था स्कूल की प्रिंसिपल सुमन शर्मा, संस्थापक विजय शर्मा, अशोक शर्मा आदि मौजूद रहे।

पहले दिन कई प्रतियोगिताएं

पूर्व मंत्री एवं भिवानी विधायक घनश्याम सर्राफ ने कहा कि उन्होंने इतने सारे बच्चों और स्टाफ को सहभागिता देकर उन्हें बहुत खुशी हुई। उन्होंने एसो को बधाई दी। दो दिवसीय खेल महाकुम्भ के पहले दिन खो-खो, वॉलीबॉल, कबड्डी, एथलेटिक्स के साथ-साथ क्रिकेट प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया। ये प्रतियोगिताएं अंडर 11, अंडर 14 और अंडर 19 कैटेगरी में लड़कें और लड़कियों के लिए आयोजित की गयीं। क्रिकेट के मैच जिल्द वाली स्कूल में आयोजित किए गए।

पं. जवाहरलाल नेहरू के जन्म दिवस पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने किया नमन

पं. जवाहरलाल नेहरू नेक, ईमानदार व मिलनसार व्यक्तित्व के धनी थे : अनिरुद्ध चौधरी

हरिभूमि न्यूज ►► भिवानी

कांग्रेस के भिवानी ग्रामीण जिला अध्यक्ष अनिरुद्ध चौधरी के निवास स्थान पर पंडित जवाहरलाल नेहरू की जयंती पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने नेहरू की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। इस दौरान सभी कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने जिला अध्यक्ष अनिरुद्ध चौधरी के नेतृत्व में देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू को नमन करते हुए पुष्प अर्पित किए। इस दौरान उपस्थित कांग्रेस कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कांग्रेस के भिवानी



भिवानी। नेहरू जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में पुष्प अर्पित करते हुए।

ग्रामीण जिला अध्यक्ष अनिरुद्ध चौधरी ने कहा कि पंडित जवाहरलाल नेहरू बहुत ही नेक, ईमानदार तथा मिलनसार व्यक्तित्व के धनी थे। जिसके चलते उन्हें भारत देश का प्रथम प्रधानमंत्री चुना गया और उन्होंने करीब 16 वर्षों तक प्रधानमंत्री के रूप में देशहित के लिए

पशुपालन विभाग का वैक्सीनेशन अभियान शुरू

भिवानी में घर-घर जाकर पशुपालन विभाग की टीम गाय व भैंस लगा रही है मुंहखुर व गलघोट्ट की वैक्सीन

हरिभूमि न्यूज ►► भिवानी

पशुपालन एवं डेयरी विभाग द्वारा मुंहखुर व गलघोट्ट बीमारी की रोकथाम के लिए 23 अक्टूबर से 23 नवंबर तक चलाए जा रहे संयुक्त वैक्सीन अभियान के तहत जिला भिवानी में पशुपालन विभाग के उप निदेशक डा. रविंद्र सहरावत व उपमंडलाधिकारी डा. राजेश जाखड़ के मार्गदर्शन में टीकाकरण का कार्य युद्ध स्तर पर जारी है। इसी कड़ी में अब पशुपालन विभाग की टीम के पशु



भिवानी। टीकाकरण अभियान के दौरान पशुओं को टीका लगाते हुए।

चिकित्सक घर-घर जाकर गाय व भैंस को मुंहखुर व गलघोट्ट की वैक्सीन लगा रहे हैं तथा यह अभियान वीरवार को भी भिवानी में जारी रहा। कि मुंहखुर व गलघोट्ट की संयुक्त वैक्सीन पशुओं के लिए अत्यंत लाभदायक है। यह वैक्सीन पशुओं को इन दोनों संक्रामक बीमारियों से

टीकाकरण का लक्ष्य पूरा किया जा चुका है। इस मौके पर पशु चिकित्सक हरिओम, डॉ. सुभाष और वीएलडीए अवशेष कुमार ने बताया कि मुंहखुर व गलघोट्ट की संयुक्त वैक्सीन पशुओं के लिए अत्यंत लाभदायक है। यह वैक्सीन पशुओं को इन दोनों संक्रामक बीमारियों से

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर पशु चिकित्सक डा. सुभाष, डॉ हरिओम, वीएलडीए विरेन्द्र श्योरण, दीपक, अवशेष कुमार, पशु परिचर : पंकज, विश्वजीत कुमार, सतीश कुमार, देवानंद, पशु प्रेमी कपिल वर्मा सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति अभियान में शामिल रहे।

सुरक्षित रखती है, जिससे न केवल पशुओं का स्वास्थ्य बेहतर रहता है बल्कि दुग्ध उत्पादन में भी स्थिरता बनी रहती है। उन्होंने बताया कि मुंहखुर बीमारी से पशुओं के मुह, जीभ व खुरों पर घाव हो जाते हैं, जिससे दूध उत्पादन पर विपरीत असर पड़ता है, वहीं गलघोट्ट एक घातक बुखारजनित रोग है जो सांस व गले को प्रभावित करता है।



भिवानी। श्रीमद्भागवत कथा में उपस्थित श्रद्धालु।

कथा में सुनाई श्रीराम आदर्श, भक्त प्रहलाद व श्रीकृष्ण जन्म की दिव्य गाथा

भिवानी। छोटी काशी के नाम से विख्यात भिवानी के कमला नगर स्थित श्रीराम मंदिर में सात दिवसीय श्रीमद्भागवत कृष्ण कथा ज्ञान यज्ञ का उत्साह शनिवार को चौथे दिन भी जारी रहा। पूर्व पार्षद प्रवीण चावला ने बताया कि धार्मिक आयोजन सतगुरु शक्तिदास महाराज एवं स्वामी सबानंद महाराज के पावन आशीर्वाद से संचालित हो रहा है, जो 18 नवंबर तक निरंतर चलेगा। कथा का वाचन अमिल प्रणामी महाराज कर रहे हैं, जिनकी मधुर वाणी और ओजस्वी प्रस्तुति ने सभी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। श्रीमद्भागवत कृष्ण कथा ज्ञान यज्ञ के चौथे दिन कथावाचक अमिल प्रणामी ने मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के जीवन आदर्श, भक्त प्रहलाद की अटूट भक्ति, शबरी के निःस्वार्थ प्रतीक्षा एवं प्रेम तथा भगवान श्रीकृष्ण के जन्म की कथा सुनाई।

निर्माण मजदूरों के हितों पर चाबुक, 26 को प्रदर्शन के बाद होगा आंदोलन का ऐलान

26 नवंबर को जिला स्तर पर मजदूर किसान करेंगे प्रदर्शन और 14 दिसंबर को निर्माण मजदूर सीएम आवास कुरुक्षेत्र में करेंगे राज्य स्तरीय प्रदर्शन

हरिभूमि न्यूज ►► भिवानी

भवन निर्माण कामगार यूनियन हरियाणा, भिवानी की जिला स्तरीय बैठक सीटू कार्यालय भिवानी में लिया गया, जिला स्तरीय आम सभा की अध्यक्षता जिला प्रधान सदीक डाढ़म ने की। संचालन यूनियन व सीटू जिला सचिव अनिल कुमार ने किया। बैठक को संबोधित करते हुए राज्य अध्यक्ष मनोज सोनी ने कहा कि सरकार की भ्रष्टाचार और मजदूर विरोधी नीतियों



के खिलाफ संयुक्त निर्माण मजदूर मोर्चा हरियाणा ने घोषणा की है कि प्रदेश भर के हजारों निर्माण मजदूर 14 दिसंबर को कुरुक्षेत्र में मुख्यमंत्री आवास का घेराव करेंगे। यह प्रदर्शन निर्माण मजदूर पोर्टल के बंद किए जाने, मजदूरों के पंजीकरण में रुकावट, कल्याण योजनाओं के ठप होने, बढ़ते भ्रष्टाचार और मजदूर

नागरिक पीआईडी को स्वयं करें सत्यापित: मलिक

शहरी क्षेत्र में स्थित सभी प्रॉपर्टियों का सर्वे करवाकर प्रॉपर्टी आईडी की सुविधा दी

हरिभूमि न्यूज ►► भिवानी

सरकार द्वारा आमजन को सुविधा के लिए नागरिक अपनी सभी संपत्तियों की पीआईडी को एनडीसी पोर्टल पर ऑनलाइन कर स्वयं सत्यापित कर सकते हैं। जिला नगर आयुक्त गुलजार मलिक ने ये जानकारी देते हुए बताया कि नए शहरी क्षेत्र में स्थित सभी प्रॉपर्टियों का सर्वे करवाकर प्रॉपर्टी आईडी की सुविधा दी गई है, जिसे शहरी स्थानीय निकाय हरियाणा द्वारा शहर की सभी संपत्तियों को पीआईडी के रूप में एनडीसी पोर्टल पर आमजन हेतु ऑनलाइन कर दिया गया है।

नागरिक स्वयं करें प्रॉपर्टी सत्यापन

नागरिकों से आह्वान है कि वे अपनी-अपनी प्रॉपर्टी आईडी की पहचान कर प्रॉपर्टी आईडी को स्वयं सत्यापित करें ताकि आप अपनी प्रॉपर्टी को लॉक कर सकें। प्रॉपर्टी लॉक होने से अन्य आमजन द्वारा प्रॉपर्टी आईडी में कोई हेरफेर नहीं की जा सकेगी। उन्होंने बताया कि इसके साथ ही समय-समय पर सरकार द्वारा दी जाने वाली छूट व अन्य सेवाओं की जानकारी मोबाइल पर मिल सके। इसके साथ ही प्रॉपर्टी में किसी भी प्रकार की त्रुटि है तो आप स्वयं एनडीसी पोर्टल पर ऑनलाइन आवेदन लगाकर त्रुटि दुरुस्त करवा सकते हैं। यदि नागरिकों को प्रॉपर्टी आईडी स्वयं सत्यापित करने में किसी प्रकार की समस्या आती है तो वे नगर परिषद के कर्मचारियों से संपर्क करें।

कार्यक्रम में वंदे मातरम का किया गया सामूहिक गायन

कौशल ज्ञान व शैक्षणिक उपलब्धियों के साथ आगे बढ़ने का किया आह्वान

हरिभूमि न्यूज ►► भिवानी

चौधरी बंसी लाल विश्वविद्यालय भिवानी में उच्चतर शिक्षा निदेशालय हरियाणा द्वारा हरियाणा राज्य उच्चतर शिक्षा परिषद के सहयोग से एक दिवसीय राष्ट्रीय शिक्षा नीति के परिप्रेक्ष्य में क्षमता निर्माण एवं मॉटेनरिंग कार्यशाला का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम वंदेमातरम की एक सौ पचासवीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में वंदेमातरम का सामूहिक गायन किया गया। कार्यशाला का आधिकारिक प्रारंभ हरियाणा उच्चतर शिक्षा निदेशालय के संयुक्त निदेशक डॉ अजीत सिंह के स्वागत भाषण के साथ



भिवानी। दीप प्रज्वलित करके कार्यक्रम का शुभारंभ करवाते हुए।

हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रहे हरियाणा राज्य उच्चतर शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रोफेसर कैलाश चंद्र शर्मा। प्रोफेसर शर्मा ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के समावेशी रूप पर चर्चा की एवं शिक्षा नीति के माध्यम से

विद्यार्थियों के समग्र विकास पर बल दिया। डॉ शर्मा ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से लचीलापन एवं समन्वय लाने की बात कही ताकि कौशल ज्ञान और शैक्षणिक उपलब्धियां एक साथ आगे बढ़ सकें। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय की कुलगुरु प्रोफेसर दीपिता धर्माणी ने विश्वविद्यालय द्वारा अपनाए गए राष्ट्रीय शिक्षा नीति के विभिन्न बिन्दुओं पर चर्चा की एवं इस नीति के माध्यम से शिक्षा के नए आयामों एवं अवसरों से अवगत कराया। कार्यशाला का प्रथम तकनीकी सत्र राष्ट्रीय क्रेडिट फ्रेमवर्क (एनसीआरएफ) पूर्व अधिगम की

क्रेडिट फ्रेमवर्क: यूजी व पीजी विषय पर की चर्चा

कार्यशाला के द्वितीय सत्र की वक्ता रही कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की बायोकेमिस्ट्री की प्रोफेसर अनिता दुआ जिन्होंने समाज और बहु-विधायक शिक्षा और पाठ्यक्रम और क्रेडिट फ्रेमवर्क यूजी और पीजी विषय पर चर्चा की। कार्यशाला के इस सत्र का संचालन हरियाणा उच्चतर शिक्षा निदेशालय के संयुक्त निदेशक डॉ अजीत सिंह ने किया। अंत में कार्यशाला के समन्वयक प्रोफेसर सुरेंद्र कौशिक ने सभी का धन्यवाद किया। कार्यशाला में सौ से भी अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया जिसमें चौधरी लाल विश्वविद्यालय मगत फूल सिंह विश्वविद्यालय के शैक्षणिक विभाग एवं संबद्ध महाविद्यालयों के प्राचार्यों एवं प्रतिनिधियों ने भाग लिया। कार्यशाला में चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय के विशिष्ट पदाधिकारी डीन अकादमिक प्रोफेसर दिनेश कुमार मलान, डीन लाइफ साइंसेज प्रोफेसर ललिता गुप्ता, डीन वाणिज्य एवं प्रबंधन प्रोफेसर सुनीता मरतवाल, प्रोफेसर मयंक किंगर, प्रोफेसर नितिन बंसल, आयोजन सचिव डॉ सोनिका, डॉ ज्योत्सना शर्मा, डॉ अंशु, डॉ सोनल शेखवत उपस्थित रहे।

मान्यता (आरपीएल) और राष्ट्रीय उच्च शिक्षा योयता फ्रेमवर्क (एनएचयूएफ) विषयों पर आयोजित किया गया।

विशेष: अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस 19 नवंबर

दबावों-अपेक्षाओं-चुनौतियों से विवश दुनिया भर के पुरुष

पुरुषों को परिवार का पालक, कमाने वाला और हर दबाव सहन कर लेने वाला लौह मनुष्य समझा जाता है। सदियों से चली आ रही यह मान्यता आज भी बरकरार है। इस वजह से वे अनेक तरह की शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक समस्याओं का सामना करने को विवश हैं। ऐसे में जरूरत है कि न केवल समाज बल्कि स्वयं पुरुष भी इन दबावों से मुक्त होने का प्रयास करें।



नई सदी के पहले दशक यानी 2010 के बाद जन्मी पीढ़ी (जनरेशन अल्फा), बेयुमार तकनीकी सुविधाओं, कई चुनौतियों और अनेक दुविधाओं के साथ बड़ी हो रही है। ऐसे में उनका सहज, सही दिशा में विकास हो इसके लिए उन्हें थामने, संभालने और संबल देने की भी जरूरत है।



जनरेशन अल्फा मन-जीवन को थामने-संबल देने की दरकार

लाइफस्टाइल डॉ. मौनिका शर्मा

समय बदलने के साथ पीढ़ियां बदलती हैं और पीढ़ियों के साथ जमाने के रंग भी बदल जाते हैं। हर नई जनरेशन, पुरानी जनरेशन की तुलना में नए रंग-रंग को जीती ही है। समय के साथ बच्चों की जीवनशैली से जुड़ा हर बदलाव सहज स्वीकार्य नहीं होता। इसे समझना और एक संतुलन साधना जरूरी है। हाल के वर्षों में अल्फा जनरेशन की जीवनशैली से जुड़े बदलाव बेहद विचारणीय हो चले हैं। तकनीक की दस्तक ने परिवर्तन की गति ना सिर्फ कई गुना बढ़ा दी है बल्कि बहुत से नए पहलू भी जोड़ दिए हैं। ऐसे में जनरेशन अल्फा को संभालने के लिए पेरेंट्स को सजग रहने की जरूरत है।

पीढ़ी को डील करने के लिए कुछ मामलों में असीम धैर्य की भी दरकार है, तो कई बातों को लेकर स्पष्ट गाइडलाइंस बनाना भी जरूरी है। बड़ों का साथ और स्नेह, जेन अल्फा को भी सहज जीवन से जोड़े रखेगा। **नियमित संवाद जरूरी:** चैट-जोपीटी से सलाह लेने वाली इस जनरेशन से हर समस्या को लेकर नियमित संवाद किया जाना चाहिए। साथ ही इन बच्चों को सेल्फ कंट्रोल सिखाना भी बहुत जरूरी है। अनुशासित जीवनशैली न केवल स्मार्ट स्क्रीन से दूर रखेगी बल्कि जीवन को वास्तविक धरातल पर जीना भी सिखाएगी। इन बच्चों को स्मार्ट गैजेट्स के इस्तेमाल से पूरी तरह दूर नहीं रखा जा सकता। मानसिक रूप से मजबूत और सजग पीढ़ी पर किसी भी तरह का दबाव डालने के बजाय हर मामले में कोई

बेहतर ऑप्शन सुझाएं। रचनात्मक सोच को बढ़ावा दें। इंटरनेट गेम्स हों या दूसरी फिजिकल एक्टिविटीज, पेरेंट्स इस टैक से सही पीढ़ी को सार्थक व्यस्तता का माहौल दें। **भावनात्मक मोर्चे पर डटें:** बात चाहे असल और आभासी व्यक्तित्व का फर्क समझने की हो या सामाजिक-पारिवारिक जीवन से जोड़ने की, पेरेंट्स अल्फा पीढ़ी को इमोशनल फ्रंट पर अवश्य थामें। एडिटेड फोटोज, फॉलोअर्स और वचुअल स्टारडम की आभासी दुनिया में खोए बच्चों का मन समझने का प्रयास करना जरूरी है। सोशल लाइफ से लगभग दूर हो चुकी अल्फा पीढ़ी मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक मेल-जोल के मामले में कई चुनौतियों से जूझ रही है। गुस्सा, चिड़चिड़ापन और याददाश्त कम होने जैसी समस्याएं भी सामने आ रही हैं। ऐसे में इन बच्चों को स्क्रीन स्कॉलिंग के बजाय साथ बैठकर बात करने का महत्व समझाएं। वचुअल संसार में गुम होकर अकेलेपन और अवसाद के घेरे में आने से बचाने के लिए सॉफ्ट रिक्लस सिखाने पर फोकस करें।

व्या है जनरेशन अल्फा: वर्ष 2010 से 2024 के बीच जन्मी पीढ़ी को जनरेशन अल्फा कहा जाता है। डिजिटल संसार में आंखें खोलने वाली यह पीढ़ी जनरेशन जेड की आगली पीढ़ी है। गौरतलब है कि 1997 से 2012 के बीच जन्मे लोगों को जनरेशन जेड कहा जाता है। अल्फा पीढ़ी, ग्लोबल माइंडेड और आजाद खयाल है। साथ ही जेन अल्फा की सीखने-समझने की क्षमता और अंदाज दोनों ही अलग हैं। इस पीढ़ी को जन्म के समय से ही तकनीक ने घेरा हुआ है। डिजिटल दुनिया में कुशल नेविगेटर कही जाने वाली यह पीढ़ी, जागरूक और इन्वेंटिव विचारों की धनी भी है। अपने अधिकांशों को लेकर सजग है। अच्छी एडॉप्टिबिलिटी रखती है।



तकनीक का सही इस्तेमाल जरूरी: जनरेशन अल्फा को एक डिजिटल नेटिव माना जाता है। जन्म से ही कंयूटर, लैपटॉप, स्मार्टफोन, टैबलेट, इंटरनेट और दूसरे डिजिटल डिवाइसेस इनके जीवन का हिस्सा रहे हैं। स्मार्टफोन, सोशल मीडिया और ऑनलाइन गैजेट्स के युग में बड़ी हो रही अल्फा जनरेशन के मन और जीवन को थामने के लिए टेक्निकल गैजेट्स के सही इस्तेमाल की सीख देना आवश्यक है। लंबा समय स्क्रीन के सामने बिता रही अल्फा जनरेशन को डील करने के लिए पेरेंट्स इन्हें सामाजिक जीवन से जोड़ें। डिजिटल दुनिया में रीलस, पोस्ट्स, मोम्स देखते रहने वाली अल्फा पीढ़ी को अपने असली रिश्तों-नातों से मिलवाएं। पर्व-त्योहारों पर परंपरागत जीवन का पाठ पढ़ाएं। तकनीक को सहूलियत के बजाय लत न बनने दें। विलक भर में हर काम हो जाने के आदि न होने दें। खुद अपने काम करने दें। चिंतनीय है कि तकनीकी जलुद में उलझे ये बच्चे, कई मोर्चों पर दिशाहीनता का शिकार भी हो जाते हैं। यही वजह है कि इस हाइटेक

का फर्क समझने की हो या सामाजिक-पारिवारिक जीवन से जोड़ने की, पेरेंट्स अल्फा पीढ़ी को इमोशनल फ्रंट पर अवश्य थामें। एडिटेड फोटोज, फॉलोअर्स और वचुअल स्टारडम की आभासी दुनिया में खोए बच्चों का मन समझने का प्रयास करना जरूरी है। सोशल लाइफ से लगभग दूर हो चुकी अल्फा पीढ़ी मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक मेल-जोल के मामले में कई चुनौतियों से जूझ रही है। गुस्सा, चिड़चिड़ापन और याददाश्त कम होने जैसी समस्याएं भी सामने आ रही हैं। ऐसे में इन बच्चों को स्क्रीन स्कॉलिंग के बजाय साथ बैठकर बात करने का महत्व समझाएं। वचुअल संसार में गुम होकर अकेलेपन और अवसाद के घेरे में आने से बचाने के लिए सॉफ्ट रिक्लस सिखाने पर फोकस करें।

व्यावहारिक मोर्चे पर स्क्रीन स्कॉलिंग ने इन्हें जरूरत और इच्छा का अंतर समझने का माहौल ही नहीं दिया। अभिभावक इनकी मनचाही चीजें उपलब्ध करवाने और हर मांग पूरी करने से भी बचें। इस पीढ़ी के बच्चों के पास हर तरह की सूचनाएं और जानकारी भी पहुंच रही हैं। ऐसे में अभिभावक उनके सवाल्यों पर ध्यान दें। डाउने-डपटने और चुप रहने की हदियात देने के बजाय मन से बच्चों के विचार सुनकर ही उनको सपोर्ट किया जा सकता है। पेरेंट्स तकनीक से भरपूर वातावरण में परवरिश पाती अल्फा जनरेशन में, सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति जुड़ाव का भाव जगाएं। मशीनों के बीच पलती इस पीढ़ी के मन की संवेदनाओं को बचाना, आज पेरेंट्स की सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। *

कवर स्टोरी लोकमित्र गौतम

अनुमान के मुताबिक दुनिया में लगभग 4.14 अरब पुरुषों की आबादी है, जो विश्व आबादी की लगभग 50.27 फीसदी है। दुनिया के हर समाज में चाहे वो अफ्रीकन कबीलाई समाज हो, चाहे यूरोप का आधुनिक समाज हो, चाहे भारत और चीन जैसे पारंपरिक सभ्यताओं वाला समाज हो या अमेरिका का अत्याधुनिक बाजारू वर्चस्व वाला समाज हो। सभी समाजों में पुरुषों की मजबूती का मिथ सदियों से व्याप्त है। इस कारण आज के इस डिजिटल और एआई के युग में भी पुरुष वर्ग अनेक मानसिक, शारीरिक और आर्थिक परेशानियों के दुष्क्रम में फंसा हुआ है। दरअसल, दुनिया के हर समाज में चाहे पूरब हो या पश्चिम, पुरुषों को लेकर यह मिथ बहुत गहरे तक मौजूद है कि वे मजबूती, भावनात्मक निरपेक्षता के धनी होते हैं यानी पुरुष होने का मतलब हमेशा कठिन परिस्थितियों में भी भावनाओं पर पूरा नियंत्रण रखने वाला होता है। सच्चाई यह है कि इस मान्यता की वजह से पुरुष अनेक दबावों और परेशानियों के साथ जीने के लिए मजबूर होते जा रहे हैं।

बढ़ रही स्वास्थ्य समस्याएं

पुरुष हर हाल में मजबूत बने रहते हैं, कभी भावनाओं में नहीं बहते। इस मिथ पर खरे उतरने के लिए दुनिया के 70 फीसदी से ज्यादा पुरुष अपनी समस्याएं, खासकर शारीरिक समस्याएं किसी और को बताते ही नहीं हैं। इस वजह से उनमें शारीरिक समस्याएं बढ़ती हैं। दुनिया भर के स्वास्थ्य आंकड़े बताते हैं कि अपने स्वास्थ्य के चेकअप को लेकर पुरुष बेहद लापरवाह होते हैं। दुनिया में सबसे ज्यादा हार्ट अटैक पुरुषों को होता है और माना जाता है कि करीब 50 फीसदी पुरुषों को पहले से पता होता है कि वो इसकी चपेट में हैं, लेकिन इसका जिज्ञा कभी नहीं करते। वास्तव में इन मिथों ने पुरुषों की स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों को आज तक के

में की जाती थी कि वे अपनी परेशानियों का रोना नहीं रोएंगे। आपको यह जानकर हैरानी होगी कि दुनिया के करीब 60 फीसदी से ज्यादा पुरुष प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संबंध विच्छेद का दर्श झेलते हैं। क्योंकि वे अपनी भावनाओं और निर्भरताओं का सामाजिक रूप से प्रदर्शन नहीं कर पाते। इसलिए ऐसी परिस्थितियों में फंस जाने के बाद न केवल वे अपने दोस्त खो देते हैं बल्कि पारिवारिक अलगाव की सजा भी पुरुषों को ही मिलती है।

नहीं दिखना चाहते इमोशनली वीक

आज जब एआई, सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म की भरमार है, तब भी यह देखना चिंताजनक है कि ज्यादातर पुरुषों के मानसिक स्वास्थ्य संबंधी मुद्दे अकसर छिपे रहते हैं। उदाहरण के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक दुनिया के अधिकांश देशों में पुरुषों द्वारा किए गए आत्महत्या के प्रयास, महिलाओं की तुलना में बहुत ज्यादा होते हैं। मगर हैरानी की बात यह है कि करीब 40 फीसदी आत्महत्या करने वाले या आत्महत्या की कोशिश करने वाले पुरुष इस बात का बिना खुलासा किए यह कदम उठा लेते हैं कि वे ऐसा क्यों कर रहे हैं? दरअसल, पुरुषों की यह समस्या है कि वे अपनी भावनाएं व्यक्त नहीं कर पाते, प्राचीन काल से आज तक यह स्थिति जैसे की तैसे ही बनी हुई है। आज भी पुरुषों को उसी नजरिए से देखा जाता है, उनसे वही

अपेक्षा की जाती है। विडंबना यह है कि हर पुरुष खुद को भी उसी मिथक की नजर से देखता है। इसीलिए दुनिया का हर पुरुष भावनात्मक रूप से कमजोर होने के बाद भी इस बात से डरता है कि उसे दूसरा कोई कमजोर न समझे।

कम नहीं वर्क-इकोनॉमिकल प्रेशर

इस डिजिटल युग में समस्या सिर्फ भावनात्मक नहीं है। इस दौर की एक बड़ी समस्या यह भी है कि काम-काज की डिजिटल संस्कृति ने पुरुषों को लाइफ बैलेंस बिल्कुल बिगाड़कर रख दिया है। पिछली एक सदी से बराबरी के नारों के बीच ही दुनिया के हर समाज में आज भी पुरुषों से उम्मीद यही की जाती है कि घर में कमाने की जिम्मेदारी उन्हीं की है। सोशल मीडिया द्वारा भले पुरुषों की अनेक काल्पनिक छवियां प्रस्तुत की जाती हैं, लेकिन विश्व के श्रम पर नजर रखने वाले संगठन बताते हैं कि अभी भी जीडीपी ओरिएंटेड तर्कों के प्रयास, महिलाओं की तुलना में बहुत ज्यादा होते हैं। उदाहरण के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक दुनिया के अधिकांश देशों में पुरुषों द्वारा किए गए आत्महत्या के प्रयास, महिलाओं की तुलना में बहुत ज्यादा होते हैं। मगर हैरानी की बात यह है कि करीब 40 फीसदी आत्महत्या करने वाले या आत्महत्या की कोशिश करने वाले पुरुष इस बात का बिना खुलासा किए यह कदम उठा लेते हैं कि वे ऐसा क्यों कर रहे हैं? दरअसल, पुरुषों की यह समस्या है कि वे अपनी भावनाएं व्यक्त नहीं कर पाते, प्राचीन काल से आज तक यह स्थिति जैसे की तैसे ही बनी हुई है। आज भी पुरुषों को उसी नजरिए से देखा जाता है, उनसे वही



भारतीय पुरुषों की चुनौतियां

इस एआई और ग्लोबलाइजेशन के दौर में भारत में पुरुषों की औसत जीवन प्रत्याशा महिलाओं के मुकाबले करीब 08 साल कम है। सिर्फ उख के मामले में ही नहीं, पैदा होने के बाद स्वाइव करने के मामले में भी पुरुष महिलाओं से पीछे हैं तथा हर साल बीमारियों से मरने वाले में पुरुषों और महिलाओं में 12 से 14 फीसदी का फर्क है। 2021 के रिपोर्ट में दर्ज नेशनल क्राइम रिकॉर्ड्स ब्यूरो ऑफ इंडिया के आंकड़ों के मुताबिक देश में 72.5 फीसदी आत्महत्याएं पुरुषों द्वारा की जाती हैं। 40 फीसदी पुरुष इस दौर में भी अपनी मानसिक स्वास्थ्य की समस्या को परिवार से छिपाते हैं और 2017 के एक आंकड़े के मुताबिक अलग-अलग रेंडम स्वास्थ्य पड़ताल में पाया गया था कि करीब 197 करोड़ पुरुष किसी न किसी तरह की मानसिक समस्या से ग्रस्त थे।

सवाल है आखिर इस खुलेपन के दौर में भी पुरुष खुद को लेकर इस तरह के बंद के शिकार क्यों हैं? तो विशेषज्ञों के मुताबिक भारत में पुरुषों पर आज भी वो पारंपरिक अपेक्षाएं बनी हुई हैं जो कृषि युग से उन पर रही हैं। मसलन आज भी पुरुष को परिवार का पालक, कमाने वाला और दबाव सहन कर लेने वाला लौह पुरुष समझा जाता है। सबसे बड़ी चुनौती यह है कि इस डिजिटल मीडिया और प्रतिस्पर्धा के युग में पुरुष उपेक्षा का शिकार हो गए हैं और इस दौर में उनकी मानसिक असुरक्षा का सबसे बड़ा कारण रोजगार पर लटकती एआई की तलवार है।



गजल
अब्दुल कलाम

यहां कोई किसी का अब न होगा किसी को जब तलक मतलब न होगा तरस जाइंगी सारिल के लिए फिर नायदुदा कशितयों का जब न होगा सुलझती जाइंगी जब खूद ही उलझन किसी का जब कोई गजलब न होगा कौन होगा नागलौदा फिर अदब का जब सलौके का कोई मकतब न होगा दे सका न जा वतन की राह में जो उसके जीने का कोई सबब न होगा कर सका न जो किनारा तू बना से साथ तेरे फिर तेरा ही रब न होगा

रंग्य
डॉ. प्रेमचंद्र द्वितीय

रौब जमाती मूछें!

अभी एक रोज सुबह-सुबह पार्क में टहलते समय मित्रों के संग मूछों पर बहस चली तो हर कोई अपनी मूछों पर हाथ फेरते हुए मूछों के पुराण पर चर्चा करने लगा। वकील साहब मथुरा जी अपनी सीनियर सिटीजन वाली करीने से कटी सफेद मूछों पर हाथ फेरते हुए बोले, 'मैंने जब से मूछों को बढ़ाया फिर रख-रखाव बेहतर तरीके से करने लगा, तो हर कोई मेरी मूछों को देखकर मूछों के बारे में चर्चा करने लगा। हर कोई कहने लगा है कि अब हमें मूछें हों तो नरथूलाल जैसी की जगह मूछें हों तो मथुरा लाल वकील साहब जैसी कहना पड़ेगा। इस पर मैं



फूला नहीं समाता और मूछों पर हाथ फेरते हुए मूछों को और सम्मान देने लगा हूँ।' कुछ पल गवैली मुस्कन बिखरने के बाद वह पुनः बोले, 'जब से मैंने मूछें बढ़ाईं, उनको सहेजा तो बहस के मुद्दों के दौरान उस पर हाथ फेरते रहने से कई क्लाइंट के मुकदमे जीत लिए। कोर्ट में हर कोई मुझको देखने के पहले मेरी मूछें देखता। जब-जब नए क्लाइंट आते तो कहते भरे वकील साहब तो मूछों वाले हैं! जिनको देखकर ही सामने वालों के मुकदमे की मूछें नीची हो जाती हैं।' इस पर रामनिवास जी बोले, 'आपको पता नहीं जब कोई अपना रौब अपनी वाणी, कार्यशाली से नहीं जमा पाता है तो उसकी मूछें रौब जमा देती हैं। अरे, अच्छे से अच्छा पहलवान क्यों ना हो, अखाड़े में उतरने से पहले मूछ पर ताव जरूर देता है, फिर दांव खेलता है। मूछें व्यक्ति की बांडी लैंग्वेज भी होती हैं। ताव देने वाली मूछें, डाई के जरिए सफेद से काली की गई मूछें, खड़ी-आड़ी मूछें, लंबी मूछें, लकीरों वाली मूछें, होंठों के ऊपर जलर टाइप आदि-आदि तरह की मूछों से व्यक्ति की पर्सनालिटी का पता चलता है।' इस पर ज्ञान बघारने कमल जी बोले,

'मूछों को सहलाने से, हाथ फेरने से दिमाग में तरह-तरह की नई सोच और आईडिया आते हैं। मूछें समस्या को हल भी करती हैं तो कई स्थान पर प्रॉब्लम भी क्रिएट करती हैं। मूछें व्यक्ति की पहचान होती हैं। मूछों की प्रकृति आकार के आधार पर लोगों को जाना जाता है। कुछ मूछमुड़े भी होते हैं, जिन्हें अपनी पहचान किसी अन्य तरीके से बनानी पड़ती है और इसके लिए काफी जतन करने पड़ते हैं।' जब मूछों पर इतनी बहस चल रही थी तो प्रोफेसर साहब बोले, 'मूछों का आकार गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड भी बनाता है तो कई बार मूछों पर ताव देना भारी भी पड़ जाता है और मूछों पर ताव देने वाले का दांव खाली चला जाता है। मूछ कटे को नाक कटा भी लोग मानते हैं, लेकिन हकीकत में मूछें मर्दों का श्रंगार होती हैं, रौबदार, पानीदार, बट और बल वाली मूछें से लोग प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाते हैं। मूछों पर चली बहस से ही मॉनिंग वॉक का जब समय खत्म होने वाला था, तब रामनिवास जी बोले, 'मूछों के भी भाव होते हैं, मूछ और ताव का गठजोड़ होता है। बगैर मूछों के ताव के मुकाबले कोई ताव, ताव नहीं होता है, लेकिन जब अपना मन का घुंटे पीना पड़ता है तो मूछें नीचे हूई मानी जाती हैं। जब खाने-पीने की चीजों में मूछें डूबने लगती हैं तो उसे आलसी और अजीबो-गरीब माना जाता है। एंठने वाली मूछें जब तनी हुई रहती हैं तब पूरा फेस हर मोर्चे को फेस करने के लिए तैयार रहता है।' वे आगे बोले, 'कटी मूछें, तनी मूछें, राजसी मूछें, फनी मूछें, झुकी मूछें, फुकी मूछें, फेक मूछें भांति-भांति के मूछों पर किसी शायर ने कहा है, हमारी मूछें का आलम यह है कि ताव हम देते हैं, घाव दुनिया पर पड़ता है। इसलिए मूछें हों तो नरथूलाल जैसी करना न हों! *

लघुकथा / गीतक गारुड

ज गोपाल की आंखें नम थीं। उसके साथ जो हुआ, कभी वह सोच भी नहीं सकता था। छोटे भाई साजन को अपनी ससुराल जाना था। वहां कोई धार्मिक अनुष्ठान था। निमंत्रण पत्र गोपाल के पास भी आया था। साजन के पास बड़ी गाड़ी थी। गोपाल ने उससे पूछा, 'साजन तुझे ससुराल जाना है न शाम को?' 'हां भैया, जाना है।' साजन ने जवाब दिया। गोपाल ने कहा, 'साजन मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा।' 'यह तो बहुत अच्छी बात है। आपको जरूर ले चलूंगा।' साजन ने धरोसा दिया। गोपाल ने जाने की पूरी तैयारी कर ली। बस इंतजार था साजन के बुलाने का। गोपाल ने अपने बड़े बेटे से कहा, 'अरे बेटा, देखकर तो आ, तेरा चाचा मुझे लेने क्यों नहीं आया? समय तो हो चुका है।' 'जी पिताजी! कहकर बेटा चाचा के घर चला गया। वहां से लौटकर बताया, 'पिताजी, चाचा जी तो निकल गए, घर पर ताला लगा हुआ है और गाड़ी भी नहीं है वहां।' गोपाल का मन भारी हो गया। उसने तुरंत फोन किया, 'साजन कहां है तू?' 'भैया मैं तो निकल गया ससुराल के लिए।' साजन ने जवाब दिया। 'मुझे तो तेरे साथ चलना था

लघुकथा / गीतक गारुड

ज गोपाल की आंखें नम थीं। उसके साथ जो हुआ, कभी वह सोच भी नहीं सकता था। छोटे भाई साजन को अपनी ससुराल जाना था। वहां कोई धार्मिक अनुष्ठान था। निमंत्रण पत्र गोपाल के पास भी आया था। साजन के पास बड़ी गाड़ी थी। गोपाल ने उससे पूछा, 'साजन तुझे ससुराल जाना है न शाम को?' 'हां भैया, जाना है।' साजन ने जवाब दिया। गोपाल ने कहा, 'साजन मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा।' 'यह तो बहुत अच्छी बात है। आपको जरूर ले चलूंगा।' साजन ने धरोसा दिया। गोपाल ने जाने की पूरी तैयारी कर ली। बस इंतजार था साजन के बुलाने का। गोपाल ने अपने बड़े बेटे से कहा, 'अरे बेटा, देखकर तो आ, तेरा चाचा मुझे लेने क्यों नहीं आया? समय तो हो चुका है।' 'जी पिताजी! कहकर बेटा चाचा के घर चला गया। वहां से लौटकर बताया, 'पिताजी, चाचा जी तो निकल गए, घर पर ताला लगा हुआ है और गाड़ी भी नहीं है वहां।' गोपाल का मन भारी हो गया। उसने तुरंत फोन किया, 'साजन कहां है तू?' 'भैया मैं तो निकल गया ससुराल के लिए।' साजन ने जवाब दिया। 'मुझे तो तेरे साथ चलना था

भाई से बड़ा

और तूने हमी भी भरी थी।' गोपाल बोला। 'हां भैया...पर बात ऐसी थी कि...' वह बोलता-बोलता रुक गया। 'कैसी बात थी भाई?' गोपाल ने पूछा। 'गाड़ी में एक सीट आगे की खाली थी, लेकिन मुझे ओरियो को ले जाना पड़ा।' साजन हकलाते हुए बोला। 'ओरियो...ये ओरियो कौन है?' गोपाल ने आश्चर्य से पूछा। 'भैया, ओरियो मेरे डॉगी का नाम है।' साजन ने बताया। 'व्या डॉगी को बैठाने के लिए तूने बड़े भाई को छोड़ दिया... भाई से बड़ा तेरा डॉगी हो गया।' कहकर गोपाल ने तुरंत फोन काट दिया। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान गूण्य

चुप्पियों का शोर

कई वर्षों से साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में सक्रिय मनोज मोहन का पहला कविता संग्रह 'शोर एवं अन्य कविताएं' हाल में ही छपकर आया है। मनोज अपनी कविताओं में कम शब्द चुनकर बड़ी और गहरी बात कहने में यकीन करते हैं। यही वजह है कि संग्रह की अधिकांश कविताएं छोटी हैं लेकिन उनमें हमारे समय, समाज के विपूर और

मनुष्यता के समक्ष उपस्थित संकेतों को साफ तौर पर लक्षित किया जा सकता है। 'मैं चाहता हूँ होना/सामान्य व्यक्ति/जिसे सहज जीवन मिले।' (सामान्य व्यक्ति) और 'चलो हम एक किताब बनाएं/जहां तुम दिखो खुश-खुश-मैं रूढ़ उदास-उदास।' (चलो हम एक किताब बनाएं) जैसी पंक्तियां अपनी साधारणता में भी असाधारण भावार्थ प्रकट करती हैं। ये खूब करके बड़ी और गहरी बात कहने में मनोज अपनी कविताओं में कम शब्द चुनकर बड़ी और गहरी बात कहने में यकीन करते हैं। यही वजह है कि संग्रह की अधिकांश कविताएं छोटी हैं लेकिन उनमें हमारे समय, समाज के विपूर और





गोवा को आमतौर पर शानदार सी बीच वाले स्थल, हनीमून और मस्ती भरे टूरिस्ट डेस्टिनेशन के तौर पर जाना जाता है। लेकिन गोवा में ऐसे कई लोकेशन भी हैं, जो हमें इतिहास और संस्कृति से रूबरू कराते हैं। जानिए, गोवा में स्थित कुछ ऐसे ही ऑफबीट टूरिस्ट प्लेसों के बारे में।

टूरिस्ट स्पॉट
बुधरा फातमा

हालांकि भारत के लगभग हर राज्य में ऐसे स्थल मौजूद हैं, ऐसी ठेठ कहानियां और किस्से सुनने-पढ़ने को मिल जाएंगे, जिसमें उस स्थान और अपने देश से जुड़े गौरवशाली इतिहास का ब्यौरा मिलता है। गोवा में भी ऐसे कई कम चर्चित स्थल मौजूद हैं। खूबसूरत सी बीच के लिए दुनिया भर में फेमस गोवा में स्थित कुछ ऐसे ही लोकेशन के बारे में आपको बता रहे हैं, जहां इतिहास और संस्कृति का मिला-जुला संगम देखने को मिलता है।

बुधरा ताली

साउथ गोवा के नेत्रवाली में एक अनोखा तालाब मौजूद है, जिसे बुधरा ताली या बबल लेक के नाम से जाना जाता है। करीब 400 साल पुराना यह तालाब गोपीनाथ मंदिर के प्रांगण में मौजूद है, जहां सिर्फ ताली बजाने या किसी तेज आवाज से ही तालाब के नीचे से पानी के ऊपर की तरफ बुलबुले बनने लगते हैं। यहां के स्थानीय लोगों में इस तालाब को लेकर बहुत श्रद्धा है। हालांकि साइंटिस्ट्स इस प्रभाव के लिए किसी रासायनिक क्रिया और गैस को जिम्मेदार मानते हैं। कुदरत के करिश्मे वाले इस अनोखे तालाब को देखने के लिए दूर-दूर से पर्यटक आते हैं।

उसगलीमल शिलालेख

साउथ गोवा के उसगलीमल गांव में मौजूद यह शिलालेख, करीबन 4 हजार से 6 हजार साल पुराना है। सालों तक इस गांव से बहती कुशावती नदी की गोद में छुपे



इतिहास-संस्कृति से रूबरू कराते
गोवा के ये अनोखे पर्यटन स्थल



कुर्डी गांव

रिवोना केव

ये शिलालेख लोगों की नजरों से दूर थे। 1993 में जब गांव वालों की नजर नदी के किनारे पत्थरों पर अलग-अलग आकृतियों पर पड़ी तो उन्होंने पुरातत्व विभाग को खबर दी। पता चला ये हजारों साल पहले, शायद मध्य पाषाण युग का समय था, जब इंसान अपने आस-पास की चीजों को देखकर उसकी आकृति पत्थरों पर उकेरा करता था। इन आकृतियों में जानवर, तरह-तरह के रास्ते और पैरों के निशान देखने को मिलते हैं। अगर आप इतिहास और पुरातात्विक अवशेषों में रुचि रखते हैं, तो गोवा के इस जगह पर आपको जरूर जाना चाहिए। घने जंगल और कुशावती नदी का यह हिस्सा आपका मन मोह लेगा।

कुर्डी गांव

सन 1960 तक सांगेम तालुका नामक स्थान पर मौजूद कुर्डी गांव एक अच्छा-खासा बसा-बसाया गांव हुआ करता था। हिंदू, मुस्लिम और कैथलिक समुदाय की समृद्ध आबादी यहां निवास करती थी।

सन 1960 में जब साउथ गोवा को ज्यादा मात्रा में पानी मुहैया करवाने के लिए सलोलिम डैम बनाने का प्रस्ताव आया तो सबसे पहले कुर्डी गांव को खाली करवाया गया। ये पूरा गांव पानी के अंदर समा गया ताकि डैम का पानी सुचारू रूप से बह सके। मई महीने में जब पानी का स्तर कम होता है तब गांव का कुछ हिस्सा पानी के बाहर दिखाई देता है। वे लोग, जो अपना घर बार छोड़कर दूसरी जगह बस गए वो मई महीने में यहां आकर अपनी पुरानी यादों को ताजा करते हैं। हर साल तीनों समुदाय के लोग यहां आकर अपने-अपने धार्मिक जगहों की स्मृति में उत्सव मनाते हैं। इस दौरान बड़ी संख्या में पर्यटक भी यहां जुटते हैं।

रिवोना केव

साउथ गोवा में स्थित रिवोना केव यानी रिवोना गुफाओं को उस दौर का ऐतिहासिक स्थल माना जाता है, जब गोवा में मानव समुदाय की बस्ती बसनी शुरू ही हुई थी। माना जाता है कि इस जगह पर उस समय के बुद्धिमान लोग ही आकर बसते थे। मान्यता है कि यहां बौद्ध धर्म के अनुयायी भी रहा करते थे। 7वीं शताब्दी की इन गुफाओं को देखने के लिए यहां देश-विदेश से काफी पर्यटक आते हैं। *

इंसान ही नहीं पशु-पक्षी भी करते हैं बदलते मौसम की तैयारी

हम इंसान तो तकनीकों के जरिए मौसम में आने वाले बदलावों का पता लगाकर उसके हिसाब से अपनी तैयारी करते हैं। लेकिन प्रकृति ने कई पशु-पक्षियों को ऐसी क्षमता नैसर्गिक रूप से प्रदान की है। ऐसे ही कुछ जंतुओं के बारे में जानिए।

रोहक / अपराजिता

पशु-पक्षी भले इंसानों की तरह तेज दिमाग के न होते हों, लेकिन इंसानों की ही तरह आने वाले मौसम की दुश्धारियों से बचने के लिए अपने स्तर पर वे भी बाकायदा योजनाबद्ध ढंग से तैयारी करते हैं। जिस तरह मौसम बदलने से पहले इंसान गर्म कपड़ों, छत को मरम्मत या पंखे, कूलर आदि को दुरुस्त कर लेते हैं, उसी तरह धरती के दूसरे पशु-पक्षी भी आने वाले मौसम की चुनौतियों के लिए अपनी ही सूझबूझ और योजनाबद्धता से तैयारी करते हैं। फर्क सिर्फ इतना होता है कि इंसानों के विपरीत ये पशु-पक्षी ऐसी तैयारियां बिना किताबों पढ़े, बिना मौसम विभाग की चेतावनी सुने ही करते हैं। क्योंकि इनके पास न रेडियो होता है, न प्रकृति की गतिविधियों की सूचना देने वाला इनके लिए कोई जरिया होता है। दरअसल, खुद कुदरत ने ही इन्हें अनुमान लगाने की अद्भुत क्षमता दी है, य उसी के आधार पर अपने सहज ज्ञान और जैविक अनुभव प्रवृत्तियों के जरिए मौसम की बदलती करवटों के लिए महीनों पहले से ही तैयारी में जुट जाते हैं।

कोयल की कूक का संकेत: भारत के ग्रामीण परिवेश में बहुत सारी जानकारियों को अखबारों, रेडियो या किताबों से नहीं, पशु-पक्षी की गतिविधियां देखकर जानी, समझी जाती हैं। मसलन, अगर कोयल के स्वर में मधुर स्वर आ गया है, तो इसका मतलब यह है कि वह बदलते तापमान के प्रभाव में अपने प्रजनन चक्र को समायोजित करने की कोशिश में है। मसलन, अगर कोयल के स्वर में मधुरता है, तो पतझड़ निकट है, क्योंकि मार्च, अप्रैल में जब पेड़ों पर नई कोयलें फूटती हैं, उसी समय कोयल, कोवे के घोंसले में चुपके से अंडे दे देती है, इसे विषय के जानकार लोग 'बूढ़ पैरासिटिज्म' कहते हैं यानी जब तपती गर्मी आए, तो उसके बच्चे किसी अन्य पक्षी की देखभाल में सुरक्षित पड़ें। कहने का मतलब यह है कि कोयल खुद मौसम की कठिनाइयों को समझकर पहले से ही अपनी अगली पीढ़ी की सुरक्षा सुनिश्चित कर लेती है।

हाथी बनाता है जल का स्रोत: हाथी एक ऐसा पशु है, जो भारत में मानसून और सूखे दोनों का बहुत सटीक तरीके से



अंदाजा लगा लेता है। सूखा पड़ने से पहले वह झुंड बनाकर लंबी यात्राएं शुरू कर देता है और उस और बढ़ता है, जहां जलस्रोत होते हैं। राजस्थान और मध्य भारत के जंगलों में हाथियों का यह जलप्रवास, वर्षों पुराने जलस्रोतों की उनकी स्मृतियों पर आधारित होते हैं। वैज्ञानिकों ने पाया है कि वे भूमि की नमी, पौधों के मुद्गाने और हवा की गंध से पानी की कमी का किसी भी वैज्ञानिक डिवाइस से ज्यादा सटीक अनुमान लगा लेते हैं।

अबाबील देती है मानसून का संदेश: इस छोटी-सी चिड़िया को भारत में मानसून की संदेशवाहक भी कहते हैं। दरअसल, अबाबील, हजारों किलोमीटर दूर अफ्रीका या दक्षिण भारत से उड़कर गर्म और आर्द्र इलाकों में आती है।



वैज्ञानिकों ने सालों निगरानी के बाद यह पाया है कि अबाबील पक्षी केवल भोजन की तलाश के लिए प्रवास नहीं करती। इसके इस प्रवासन चक्र में मौसम जनित सुरक्षा की भी योजना छिपी होती है। जब उत्तर भारत में सर्दी बढ़ती है और कोट-पतंगे बेहद कम हो जाते हैं, तब यह अबाबील दक्षिण भारत की ओर उड़ जाती है और जैसे ही गर्मियां लौटती हैं, यह भी अपने पुराने घर की ओर लौट आती है। ग्रामीण भारत में लोग अबाबील देखकर अनुमान लगाते हैं कि अब बारिश बस आने ही वाली है। वास्तव में यह पक्षी वातावरण के दबाव और आर्द्रता के सूक्ष्म बदलाव को बहुत बारीकी से महसूस कर लेती है।

इस तरह देखें तो इंसान ही नहीं, पशु-पक्षी भी आने वाले मौसम की दुश्धारियों से खुद को बचाने के लिए अपने ज्ञान, पूर्वानुमान और कठोर अनुशासन का इस्तेमाल करते हैं। *

जल संचित कर लेते हैं ऊंट

ऊंट को रेगिस्तान का जहाज माना जाता है, क्योंकि वह रेगिस्तान में दूसरे किसी भी वाहन से ज्यादा बेहतर और सहजता से रह लेता है। लेकिन ऊंट सिर्फ रेगिस्तान के बारे में ही इतनी सटीकता से नहीं जानता बल्कि वह रेगिस्तान के सबसे कठोर मौसम में जीवित रहने की कला भी मल्लोमाति जानता है। यही वजह है कि जब राजस्थान में गर्मी अपने चरम पर होती है, तो वह न केवल अपने शरीर में पानी की खपत को नियंत्रित कर लेता है बल्कि वैज्ञानिक दृष्टि से उसका शरीर पानी को पुनःअवशोषित करने की क्षमता भी रखता है। इसी के चलते वह कुछ दिनों तक बिना पानी पीए भी रह लेता है, लेकिन यही ऊंट मानसूनी संकेत मिलने पर जरूरत से कई गुना ज्यादा पानी पीता है। अपने शरीर में एक वाटर रिजर्व मिलाकर लेता है। वास्तव में यह उसका छठी इंद्रिया का मौसम प्रबंधन है, जो रेगिस्तान की कठोर परिस्थितियों में उसके जीवन को संभव बनाता है।



अवैररनेस
शिखर चंद जैन

हर साल 19 नवंबर को वर्ल्ड टॉयलेट डे यानी विश्व शौचालय दिवस मनाया जाता है। आप सोच रहे होंगे कि भला शौचालय के लिए भी कोई दिन मनाने की क्या जरूरत है! आपको बता दें कि भले ही आपके घर में सुविधायुक्त शौचालय है, लेकिन दुनिया में आज भी करोड़ों लोग ऐसे हैं, जिनके पास सुरक्षित और स्वच्छ शौचालय नहीं हैं। विश्व शौचालय संगठन द्वारा एकत्रित आंकड़ों के अनुसार, विश्व में लगभग एक अरब लोग आज भी खुले में शौच करते हैं। ऐसे में यह दिन हमें यह याद दिलाने के लिए मनाया जाता है कि शौचालय हमारे स्वास्थ्य, सम्मान और पर्यावरण के लिए कितना जरूरी है।

विश्व शौचालय दिवस का इतिहास: विश्व शौचालय दिवस की शुरुआत 2001 में हुई थी। स्वास्थ्य और जन सरोकार विशेषज्ञों की सलाह पर स्वच्छता के मुद्दों पर वैश्विक ध्यान आकर्षित करने के लिए विश्व शौचालय संगठन की स्थापना की गई। वर्षों की अंतरराष्ट्रीय बहस और सिफारिश के बाद, संयुक्त राष्ट्र ने 2013 में आधिकारिक तौर पर विश्व शौचालय दिवस को वार्षिक आयोजन के रूप में घोषित किया। यह दिवस 2030 तक सभी के लिए स्वच्छ जल और स्वच्छता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से मनाया जाता है।

बुनियादी जरूरत है शौचालय: इस वर्ष विश्व शौचालय दिवस की थीम 'बदलती दुनिया में स्वच्छता' और स्लोगन है 'हमें हमेशा शौचालय की आवश्यकता होगी'। इस साल की थीम और स्लोगन का मुख्य संदेश यह है कि चाहे दुनिया कितनी भी बदल जाए, जितनी भी नई तकनीकें आ जाएं, हम चाहे कितने ही एडवांस हो जाएं, शौचालय की जरूरत कभी खत्म नहीं होगी। यह कोई लगजरी नहीं बल्कि एक बुनियादी जरूरत है। हर घर में शौचालय होना तो आवश्यक है ही। साथ ही यह भी जरूरी है कि हम शौचालय का इस्तेमाल करते समय और उसके बाद कुछ बातों का ध्यान रखें।

फलश करते समय रखें ध्यान: टॉयलेट में फलश हमेशा ढक्कन लगाकर करें क्योंकि टॉयलेट फलश आपके टॉयलेट से छह फीट की ऊंचाई तक कीटाणुओं को बाहर निकाल सकता है। हर बार जब आप टॉयलेट फलश करते हैं, तो कीटाणु हवा में उड़ जाते हैं और आपके बाथरूम में घूमकर आपके टॉयलेट के आस-पास की जगहों और वस्तुओं जैसे-टूथब्रश, साबुन आदि पर भी पहुंच सकते हैं। अगर आपके टॉयलेट सीट में ढक्कन नहीं है, तो टॉयलेट फलश करने के बाद तुरंत बाहर निकल जाएं।

हाथ अच्छे से धोएं: टॉयलेट यूज करने के बाद बहुत आधे तौर से हाथ धोना जरूरी है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि लगभग 20 प्रतिशत लोग शौचालय जाने के बाद अपने हाथ नहीं धोते। जो लोग धोते भी हैं, उनमें से केवल 30 प्रतिशत

घर में सुविधायुक्त टॉयलेट, हमारे व्यक्तिगत स्वास्थ्य के साथ-साथ स्वच्छ वातावरण एवं गरिमापूर्ण जीवन के लिए भी बहुत जरूरी है। वर्ल्ड टॉयलेट-डे, 19 नवंबर पर बता रहे हैं इससे जुड़ी कुछ रोचक बातें।

सभी के लिए है जरूरी
स्वच्छ-सुविधायुक्त टॉयलेट



ही साबुन का इस्तेमाल करते हैं, जबकि बाथरूम के कीटाणुओं को मारने के लिए साबुन से लगभग 15 से 20 सेकेंड तक अच्छी तरह हाथ धोने की सलाह दी जाती है। निराशाजनक बात यह है कि केवल 5 प्रतिशत लोग ही 15 सेकेंड या उससे ज्यादा समय तक हाथ धोते हैं।

टॉयलेट पेपर का हो सीमित इस्तेमाल: टॉयलेट पेपर का आवश्यकतानुसार सीमित उपयोग करने की आदत डालनी चाहिए। इसे एक्स्ट्रा वेस्ट करने से बचना चाहिए। एक चौंकावे वाला तथ्य यह है कि अमेरिकी प्रति वार्षिक 433 मिलियन मील टॉयलेट पेपर का उपयोग करते हैं, जो पृथ्वी से सूर्य तक जाने और वापस आने की

समिलित दूरी के बराबर है।

शौचालय में स्मार्टफोन है खतरनाक: लगभग 75 प्रतिशत स्मार्टफोन धारक शौचालय में अपने फोन का इस्तेमाल करते हैं, जिसमें टेक्स्ट मैसेज भेजना, फोन कॉल करना, वेब सर्फिंग और ऑनलाइन शॉपिंग शामिल है। यह स्वास्थ्य के लिए खतरनाक आदत तो है ही, अगर फोन टॉयलेट में गिर जाए तो यह जेब पर भी भारी पड़ सकता है। मोबाइल फोन इस्तेमाल करने वाले लोग अधिक देर तक शौचालय में बैठे रहते हैं, क्योंकि उनका ध्यान फोन पर रहता है। शौचालय की सीट पर लंबे समय तक बैठने से पाइलिस हो सकता है।

सबसे महंगा टॉयलेट



दुनिया का अब तक का सबसे महंगा टॉयलेट है।

पब्लिक टॉयलेट के इस्तेमाल में बरतें सावधानी: व्यापक सर्वे और अध्ययन के बेस पर विशेषज्ञों का मानना है कि अगर आप किसी सार्वजनिक शौचालय में सबसे साफ शौचालय का इस्तेमाल करना चाहते हैं, तो पब्लिक में सबसे पहले वाले शौचालय कक्ष (जो दरवाजा या सिंक के सबसे पास हो) का ही इस्तेमाल करें। यह आमतौर पर सबसे कम यूज किया जाता है और इसलिए तुलनात्मक रूप से अधिक साफ होता है।

सबसे गंदा स्थान नहीं है टॉयलेट: आपको यह जानकर हैरानी होगी कि औसत रसोईघर के चॉपिंग बोर्ड पर शौचालय की सीट की तुलना में लगभग 200 प्रतिशत अधिक बैक्टीरिया होते हैं। इससे ज्यादा हैरान करने वाली बात यह है कि स्मार्टफोन में टॉयलेट हैंडल की तुलना में लगभग 20 गुना अधिक बैक्टीरिया होते हैं। एक औसत डेस्क पर एक औसत शौचालय सीट की तुलना में 400 गुना अधिक बैक्टीरिया होते हैं। *

खिने देंड
केलाश सिंह

भारतीय समाज में कश्मीर से कन्याकुमारी तक हर वंश और समाज में शादी समारोह का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान माना जाता है। शादी यही वजह है कि बॉलीवुड की कई फिल्मों की कहानियों के केंद्र में भी शादी समारोह को रखा गया है। चाहे वह परंपरागत अरेंज मैरिज हो, लव मैरिज हो, भागकर की गई शादी हो, अमीर-गरीब के बीच शादी हो, अंतर-जातीय या अंतर-धार्मिक विवाह हो या दो अलग-अलग संस्कृति या भाषा से संबंधित लोगों की शादी हो।

वेडिंग एलबम जैसी 'हम आपके हैं कौन': साल 1994 में रिलीज फिल्म 'हम आपके हैं कौन' वेडिंग फंक्शन पर केंद्रित एक बेहतरीन फिल्म है। फिल्म के केंद्र में यूं तो प्रेम (सलमान खान) और निशा (माधुरी दीक्षित) की लव स्टोरी, अपने परिवार के लिए त्याग की भावना है। लेकिन यह वास्तव में अभिभावकों द्वारा तय किए गए परंपरागत हिंदू विवाह का प्रभावी ढंग से तैयार किए गए शादी के वीडियो एलबम की तरह है। फिल्म में दो दोस्त जब बहुत दिनों बाद मिलते हैं, तो आपस में अपने बच्चों की शादी कराने का निश्चय करते हैं और फिर एक परंपरागत विवाह का सिलसिला आरंभ हो जाता है। लड़के और लड़की की मुलाकात घर से बाहर अलग स्थान पर कराई जाती है। वे एक-दूसरे को पसंद कर लेते हैं। फिर उनकी सगाई होती है और बाद में लड़के वाले बारात लेकर कन्या पक्ष के घर पहुंचते हैं। फिल्म में जूते चुराने के रस्म से लेकर शादी से संबंधित अनेक रस्मों-रिवाज को खूबसूरती से दिखाया गया है। जूते चुराने की रस्म पर केंद्रित गाना 'जूते दे दो पैसे ले लो' फिल्माया गया है। इसके अलावा फिल्म में कई सिचुएशंस पर बेहतरीन गीत पिरोए गए हैं।



परंपरागत विवाह पर बनी फिल्में: देखा जाए तो उत्तर भारत में परंपरागत हिंदू विवाह और परंपरागत मुस्लिम शादी में कोई विशेष अंतर नहीं है। यहां शादी में फेरों की जगह कंजरी को बुलाकर निकाह पढ़ाया जाता है। मां-बाप द्वारा रिश्ता तय करना, सगाई, बारात, जूते चुराई, विदाई जैसी कई रस्में हिंदू और मुस्लिम समाज की शरियातों में समान रूप से देखी जा सकती हैं। 'बहू बेगम', 'मेरे हुजूर', 'मेरे महबूब' आदि फिल्मों में शादी की इन रस्मों को बखूबी प्रस्तुत किया गया है। बी.आर. चोपड़ा ने तो अपनी फिल्म 'निकाह' में शादी के साथ-साथ तीन तलाक जैसे संवेदनशील मुद्दे को भी उठाया है।

पंजाबी-पुनआरआई परिवार की 'मानसून वेडिंग': मीरा नायर की 2001 में आई फिल्म

शादी, बॉलीवुड फिल्मों का एक सदाबहार विषय रहा है। शादी पर केंद्रित एवं इसके इंट-विगिट फिल्मों और गाने बॉलीवुड में बनते रहे हैं। इनमें से कई फिल्में और गाने सुपर-हिट हिट रहे। इन्हें दर्शकों का भरपूर प्यार मिला। विवाह-केंद्रित ऐसी ही कुछ बेहतरीन फिल्मों और गानों पर एक नजर...

हिंदी फिल्मों में खूब दिखी है शादी-ब्याह की बहुरंगी छटा



'हम आपके हैं कौन' में सलमान-माधुरी दीक्षित

'विकी डोनर' में आयुष्मान के साथ यामी गौतम

'मानसून वेडिंग', दिल्ली के एक पंजाबी परिवार में शादी के आयोजन और इस दौरान होने वाले उथल-पुथल पर केंद्रित है। फिल्म में ललित वर्मा और उनकी पत्नी पिम्मी अपनी बेटी अदिति की शादी एक एनआरआई हेमंत राय से तय करते हैं। जैसा कि भारतीय समाज में अकसर होता है, इस प्रकार के विवाह में एक बार पूरा वित्तुत परिवार दुनिया भर से आकर एक जगह एकत्र हो जाता है और अपने साथ अपना भावनात्मक अतीत भी लेकर आता है। शादी की तैयारियों के बीच पारिवारिक चुगलियां, राजनीति, साजिशें, हंसी-मजाक, मौज-मस्ती आदि सब कुछ चल रहा होता है और नए प्रेम समीकरण भी विकसित होते हैं। फिल्म को इतनी खूबसूरती से बुना गया है कि 'मानसून वेडिंग' हर किसी को अपने ही परिवार की शादी जैसी लगने लगती है।

विवाह को दिखाया गया है। फिल्म में विक्रम उर्फ विककी (आयुष्मान खुराना) का ताल्लुक पंजाबी अरोड़ा परिवार से होता है, जबकि अंशिता राय (यामी गौतम) बंगाली होती है। संतानहीन परिवारों को मोटी रकम के बदले में अपना स्वयं डोनेट करने वाला विककी और तलाकशुदा बैंक कर्मचारी अंशिता एक-दूसरे से शादी करना चाहते हैं, लेकिन सांस्कृतिक भिन्नता के कारण दोनों को ही अपने-अपने परिवारों से विरोध का सामना करना पड़ता है। आखिरकार सब कुछ ठीक हो जाता है।

इंटरकलचरल मैरिज पर आधारित 'विककी डोनर': सुजीत सरकार की 2012 में रिलीज हुई फिल्म 'विककी डोनर' में दो अलग-अलग संस्कृतियों से ताल्लुक रखने वाले जोड़े के

इनमें भी दिखे शादी के अलग-अलग रंग: 'हम दिल दे चुके सनम' फिल्म में गुजराती शरदियों को उनके पारंपरिक रूप में दिखाया गया है। 'हम साथ साथ हैं' में शादी और पारिवारिक रिश्ते को बड़ी ही खूबसूरती से पेश किया गया है। आजकल की कई फिल्मों में विवाह को प्रेम, करियर और पहचान के संघर्षों की पृष्ठभूमि में दिखाया गया है, जैसे 'वीरे दी वेडिंग' फिल्म में। 'बैंड बाजा बारात' जैसी फिल्मों में शादी की योजना और आयोजन को नाटकीय अंदाज में प्रदर्शित करती हैं, जिनमें वेन्यू प्रबंधक, दूल्हा-दूल्हन के परिवार के साथ मिलकर तैयारी करते हैं। *

पॉपुलर हुए विदाई के ये गीत

शादी के बाद दूल्हन की विदाई का वक्त कुछ ऐसा होता है, जब मिलन और जुदाई, खुशी और आंसू एक साथ एक ही समय व्यक्त हो रहे होते हैं। हिंदी फिल्मों में विदाई के सिचुएशन पर अनेक गीत बने हैं, जो काफी लोकप्रिय हुए। 'छोड़ बाबुल का घर, मोहे पी के वगैर आजा जगना पड़ा' (बाबुल), 'खुशी-खुशी दो दिवा, तुम्हारी बेटी राज करेगी' (अनोजी रात), 'बाबुल की दुआएं लेती जा' (नील काण्ठ) आदि कई ऐसे सदाबहार विदाई के गीत हैं, जो आज भी हिंदी पट्टी की शरदियों में विदाई के समय खासतौर से बजाए जाते हैं।

